HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

मातृवन्दना

भाद्रपद-आश्विन, युगाब्द 5121, सितम्बर 2019

370 से जम्मू-कश्मीर आज़ाद

₹20/- प्रति

डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति शिमला द्वारा रेलवे क्लब शिमला नाभा में वृक्षारोपण कार्यक्रम में उत्तरक्षेत्र शारीरिक प्रमुख संजीवन कुमार, प्रधान मुख्य अरण्यपाल अजय शर्मा, उपमहापौर राकेश शर्मा (बाएं) और समिति के सदस्यगण (दाएं)

कर्नाटक में बाढ़ आपदा में भोजन की व्यवस्था करते हुए सेवा भारती कर्नाटक के कार्यकर्ता

दिल्ली में मेधाविनी सिंधु सृजन कार्यक्रम में उपस्थित प्रबुद्ध महिलाएं अपनी सहभागिता प्रस्तुत करते हुए

भारतीय बौद्ध संघ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एकता पुरस्कार सम्मान समारोह में नालागढ़ बद्दी के समाजसेवी विशाल ठाकुर

वर्ष: 19 अंक : 09 | भाद्रपद-आश्विन, कलियुगाब्द 5121, सितम्बर, 2019

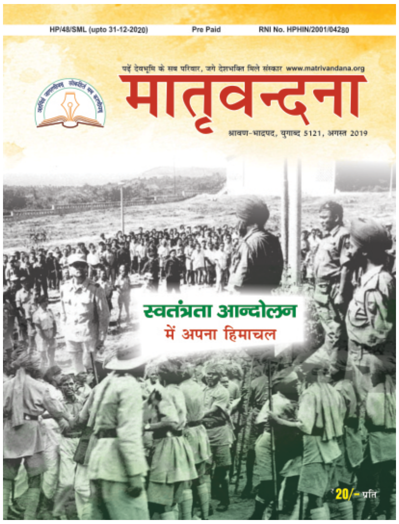

सम्पादक

डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक

वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल

दलेल सिंह ठाकुर
मीनाक्षी सूद
नीतू वर्मा
डॉ. अर्चना गुलेरिया

पत्रिका प्रमुख

शांति स्वरुप

वितरण प्रमुख

जय सिंह ठाकुर

कार्यालय:

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-4, दूरभाष: 0177-2836990

E-mail: matrivandanashimla@gmail.com,
Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक: कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रेस, प्लॉट नं. 820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित। **सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।**

मासिक शुल्क	₹20
वार्षिक शुल्क	₹100
आजीवन शुल्क	₹1000

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

संपादकीय	कश्मीर से कन्याकुमारी तक	5
चिंतन	पत्रकारिता एवं साहित्य	6
प्रेरक प्रसंग	भाई अब 50की पीढ़ी	7
आवरण	धारा 370 का हटना	8
देश-प्रदेश	हिमाचल में भी आर्थिक	12
देवभूमि	जॉब सीकर नही जॉब	14
इतिहास	शिमला की पहाड़ी रियासतों	16
घूमती कलम	तीन तलाक विधेयक	18
पुण्य स्मरण	सुषमा स्वराज	19
अध्यात्म	राज और महात्मा	20
कृषि जगत	कम लागत प्राकृतिक खेती	21
महिला जगत	जीडीपी में महिलाओं के योगदान	22
काव्य जगत	देशद्रोही फन कुचलना होगा	23
युवापथ	युवा वर्ग का सामाजिक दायित्व	24
प्रतिक्रिया	चिदंबरम केस: पी चिदंबरम	25
समसामयिकी	17वीं लोकसभा	27
दृष्टि	मानवता के संरक्षण के लिए	28
विश्वदर्शन	केन्या के सांसद टोंगी	29
स्वास्थ्य	प्लास्टिक हटाओ	30
विविध	भाषा प्रेम से राष्ट्र प्रेम	31
परिवर्तन	सपनों का एक गांव-रविंद्रनगर	32

पाठकीय

संपादक महोदय,

हिमाचल में गोवंश की सुरक्षा के लिए जयराम सरकार ने अपने पहले ही बजट में गौ सेवा आयोग का गठन किया। गौ संवर्धन बोर्ड की जगह अब गौ सेवा आयोग की स्थापना को मंजूरी दे दी गई। गौ सेवा आयोग का मुख्य कार्य हिमाचल में गौ वंश को बचाना और सड़कों पर घूम रही बेसहारा गायों को सहारा देना था। इसके साथ ही गौवंश का संवर्धन तथा नस्ल सुधारने पर भी आयोग द्वारा काम किया जाना था। कमोबेश गौवंशों की दुर्दशा सुधारने की उम्मीद जगी। आयोग बने दो वर्ष होने को हैं परंतु बेसहारा पशुओं की समस्या जस की तस बनी हुई है। हिमाचल की हर सड़कों पर ये बेजुबान दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर हैं। नतीजतन आये दिन दुर्घटनाओं में पशुधन या तो दुर्घटना स्थल पर ही दर्दनाक मौत का शिकार हो जाते है या गम्भीर चोट लगने से कई दिनों तक तड़फते हुए प्राण गवां देते हैं। पशुधन की ऐसी दर्दनाक हालत मानवीय संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है। बेसहारा गौवंश के समाधान के लिए माननीय उच्च न्यायालय के आदेश तथा जयराम सरकार द्वारा गौ आयोग बनाने के बाबजूद जमीनी स्तर पर कुछ भी नजर नहीं आ रहा है। न तो गौशाला बन पा रही हैं और न ही बेसहारा पशुधन में कमी आ रही है आये दिन गौवंश की संख्या में वृद्धि दर्ज हो रही है। जहां गौशाला है भी वहां गऊएं बदतर हालत में जीवन और मौत के बीच जूझ रही है। आज हालत यह है कि आये दिन सड़कों पर बेसहारा गौओं की तादाद बढ़ती जा रही है। जिस देश मे गौ को माता का दर्जा मिला हो तथा उन्हें पूजा जाता हो वहां गाय की ऐसी दुर्दशा दुर्भाग्यपूर्ण है। आज मानव इतना संवेदनाहीन कैसे हो गया। यह विचारणीय विषय है। ◆◆◆

कुलदीप ठाकुर, औट, मण्डी

महोदय,

प्रवासियों की बढ़ती संख्या आने वाले समय में देवभूमि हिमाचल प्रदेश के लिये विकराल समस्या बनने जा रही है। इन प्रवासियों को सड़कों के किनारे उत्पादों को बेचते देखा जा सकता है। इन्हीं प्रवासियों के बच्चे बस स्टैंड, बाजार के चौराहों में भीख मांगते देखे जा सकते हैं जो कि देवभूमि में एक नयी तस्वीर बन रही है। इसके अलावा कारीगरों श्रमिकों व गली -गली में घूम कर समान बेचने वालों की संख्या में कुछ ही वर्षों में अचानक से बढ़ोत्तरी हुयी है और साथ ही चोरी की बारदातों में भी। इसके लिये सरकार को इस विषय पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये। नहीं तो आने वाले समय में यह समस्या एक भयानक लाइलाज बीमारी का रूप धारण करने वाली है। सरकार को इस पर कठोर नियम बनाने की आवश्यकता है। इन प्रवासियों का थाने में पंजीकरण हो, इनकी शिनाख्त हो, जहां ये रहते हैं वहां मकान किराये पर लेने से पहले पंचायत या नगर कमेटी ये सुनिश्चित करें कि यह लोग थाने मे पंजीकृत हों, और इनको उत्पाद बेचने की अनुमति तब मिले जब इनके पास GST नंबर हो ताकि प्रदेश सरकार के राजस्व को भी चूना ना लगे और स्थानीय कारोबारियों और बेरोजगार युवा जो छोटी छोटी दुकान चला कर राजस्व शुल्क चुकाकर, दुकानों का किराया, बिजली का बिल देकर अपना कारोबार कर रहे हैं और बमुश्किल अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं उनके हित भी सुरक्षित रहें। सरकार को गम्भीरता से इस पर विचार करना चाहिए नहीं तो आने वाले समय में न सिर्फ यह एक विकराल समस्या बनने वाली है अपितु प्रदेश की कानून व्यवस्था के लिये भी एक बहुत बड़ा खतरा है क्यूंकि प्रवासियों के रूप में अपराधियों के लिये देवभूमि एक सुरक्षित स्थल बनता जा रहा है।

उदय सिंह पठानियाँ, विभाग अध्यक्ष विहिप, काँगड़ा

सितम्बर माह के शुभ मुहूर्त

सर्वार्थ सिद्धि,योग द्विपुष्कर योग, त्रिपुष्कर योग

तारीख	दिन	मुहूर्त	मुहूर्त का समय
1 सितंबर 2019	रविवार	सर्वार्थ सिद्धि योग	प्रातः 05.44 से दिन 03.08 तक
6 सितंबर 2019	शुक्रवार	सर्वार्थ सिद्धि योग	प्रातः 05.47 से दिन 09.59 तक
8 सितंबर 2019	रविवार	सर्वार्थ सिद्धि योग	प्रातः 05.49 से दिन 10.38 तक
15 सितंबर 2019	रविवार	सर्वार्थ सिद्धि योग	प्रातः 05.54 से रात्रि 01.18 तक
17 सितंबर 2019	मंगलवार	सर्वार्थ सिद्धि योग	प्रातः 05.55 से रात्रि शेष 05.25 तक
21 सितंबर 2019	शनिवार	द्विपुष्कर योग	दिन 08.11 से रात्रि शेष 05.57 तक
29 सितंबर 2019	रविवार	सर्वार्थ सिद्धि योग	प्रातः 06.04 से रात्रि 09.40 तक

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990, 7650000990

ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को शिक्षक दिवस, शारदीय नवरात्र, गांधी/शास्त्री जयंती, दशहरा व भगवान वाल्मीकि जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (सितम्बर)

शिक्षक दिवस	05 सितम्बर
पद्मा एकादशी	09 सितम्बर
पंचक प्रारंभ	11 सितम्बर
पितृपक्ष आरम्भ	13 सितम्बर
एकादशी	24 सितम्बर
शारदीय नवरात्र आरम्भ	29 सितम्बर
महाराजा अग्रसेन जयंती	29 सितम्बर
गांधी/शास्त्री जयंती	02 अक्टुबर
दशहरा	08 अक्टुबर
शरद् पूर्णिमा	13 अक्टुबर
भगवान वाल्मीकि जयंती	13 अक्टुबर

कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत एक

कश्यप ऋषि की जन्मभूमि कश्मीर को धरती पर स्वर्ग की संज्ञा दी गई है। आदिकाल से अपने अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रख्यात, महान कवियों की साकार कल्पना की प्रतिमूर्ति कश्मीर अपनी विशिष्ट संस्कृति के लिए भी प्रसिद्ध है। सांस्कृतिक बहुलता और सहिष्णुता की पर्याय कश्मीरियत की पूरे देश में एक पृथक पहचान रही है। किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्र के एकीकरण में तत्कालीन सरकार की कश्मीर के सम्बन्ध में की गई भयंकर मूल के कारण कश्मीर घाटी अलगाववाद और आतंकवाद की ओर बढ़ती गई। वह कश्मीर घाटी जो हिन्दू वैष्णव धर्म, शैव, बौद्ध एवं इस्लाम के प्रचार-प्रसार की केन्द्र स्थली रही, उसे विगत वर्षों में इस्लामिक स्टेट बनाने की भरपूर कोशिश की गई, जबकि भारतीय संविधान में धर्म के आधार पर किसी भी राज्य को चिन्हित करने का प्रावधान नहीं है। अनुच्छेद 370 एवं 35 ए के तहत तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने जम्मू-कश्मीर राज्य को विशेष स्वायत्तता प्रदान की जिसका दुष्परिणाम यह हुआ कि मनमाने ढंग से वहां की सरकारों ने नये अधिनियम एवं विधान बनाकर वहां के मूल निवासी हिन्दुओं, बौद्धों, जनजाति एवं दलित वर्ग को दरकिनार कर दिया। अनुच्छेद 370 पाकिस्तान समर्थक अलगाववादियों का रक्षा कवच बन गया। कश्मीर के मूल निवासी लाखों की संख्या में हिन्दुओं को अपनी जमीन गंवाकर शरणार्थी बना दिया गया। आतंकवाद का घाटी में सरेआम ताण्डव होने लगा। गहरी साजिश के तहत अलगाववादियों ने कश्मीरी युवाओं के हाथों में किताबों की जगह पत्थर पकड़ा दिये। दुर्भाग्य यह कि इन्हीं अलगाववादियों के सरगनाओं को तत्कालीन केन्द्र सरकारों की ओर से संरक्षण मिलता रहा। केन्द्र सरकार की ओर से प्रतिवर्ष दी जाने वाली विशेष सहायता एवं अनुदान राशि का दुरूपयोग कर वहां के जन-प्रतिनिधि उसे केवल निजी सम्पत्ति मान बैठे। देश की एक प्रतिशत जनता वाले प्रदेश को देश की कुल आय का 10 प्रतिशत बजट दिए जाने पर भी जम्मू-कश्मीर सिवाए अशांति के किसी भी क्षेत्र में अग्रणी नहीं है।

विगत 70 वर्षों तक कश्मीर की यही विकृत स्थिति बनी रही। यथास्थिति पर संतुष्ट रहने वाले प्राय: समस्या का समाधान नहीं कर सकते। अनिर्णीत विषय उत्तरोतर घातक बनते जाते हैं। दृढ़ इच्छा शक्ति से ही साहसिक निर्णय लिए जा सकते हैं। नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने अनुच्छेद 370 और 35 ए को हटाने तथा लेह-लद्दाख को केन्द्र शासित प्रदेश बनाकर जो ऐतिहासिक कदम उठाया है, उससे आजादी के 72 साल बाद भारत-विलय पूर्ण हुआ है और एक निशान, एक प्रधान- एक विधान की स्थापना हुई है। दिल्ली के समान जम्मू कश्मीर को विधानसभा के साथ विशेष केन्द्र शासित प्रदेश बनाया गया है।

इस 15 अगस्त को पहली बार कश्मीर के मुख्य स्थलों एवं हर पंचायत में तिरंगा झण्डा फहराया गया। एक नये अखण्ड भारत की कल्पना पुन: जीवंत हुई। 'पाक-अधिकृत कश्मीर भी अपने देश का ही हिस्सा है, इसकी प्राप्ति के लिए हम अगला कदम उठाएंगे गृहमन्त्री अमित शाह का यह बयान, भारतीय नेतृत्व की राजनीतिक दृढ़ इच्छा शक्ति और राष्ट्रवादी सोच एवं संकल्प को प्रदर्शित करता है। अब कश्मीर स्वतन्त्रता के वातावरण में खुली सांस ले सकता है। शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, उद्योग आदि में वृद्धि होगी विकास के मार्ग प्रशस्त होंगे।

15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने देश की जनता को सम्बोधित करते हुए अपने दूसरे कार्यकाल के 75 दिनों की जो उपलब्धियां गिनाई वे वस्तुत: अतुलनीय और सराहनीय हैं। राष्ट्रीय गर्व को बढ़ाने व विकास की दिशा निर्धारित करने एवं भविष्य की कार्य योजनाओं की उद्घोषणाओं से देश का आम जन आज संतुष्ट दिखाई देता है। यही भरोसेमन्द दृढ़ सरकार की विशेषता है। वर्तमान सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि है देश की जनता का विश्वास जीतना की वह जो कहती है वह करती भी है।

चिन्तन

पत्रकारिता एवं साहित्य व्यवहार में

-हितेन्द्र शर्मा

आप पत्रकार, लेखक, साहित्यकार हो सकते हैं पर भगवान नहीं, पूर्वाग्रह से ग्रसित और कान के कच्चे तो इंसान भी नहीं हो सकते, अपनी बात मनवाने के लिए जो देशद्रोह तक जा सकते हैं । ऐसे तोते पत्रकारिता एवं साहित्य जगत में किसी भी स्तर पर क्यों न पहुंच जाएं कोई भी स्वस्थ एवं जागृत मस्तिष्क उनसे सहमत नहीं होगा। क्योंकि जो व्यवहारिक नहीं वह मनुष्य ही नहीं है, लेखक व विचारक होना तो बहुत दूर की बात है। मेरा मानना है कि मर्यादा, मूल्यों व नियमों का नैतिक व्यवहार ही जीवन का आन्नद और वास्तविक उन्नति है।

'पत्रकारिता एवं साहित्य' के मंच पर अक्सर ज़हर उगलना कोई सोच कोई क्रांति नहीं किसी नागिन के मुंह लगने की मात्र निराशा व हताशा है। क्योंकि मति भ्रम में व्यक्ति सच्चाई की राह छोड़कर हमेशा गलत रास्ता अपनाते हैं और ईर्ष्यावश अपराध के गर्त में समा जाते हैं। नकारात्मकता को नकारात्मकता से समाप्त नहीं किया जा सकता, केवल सकारात्मकता ही नकारात्मकता को खत्म कर सकती है। घृणा से घृणा को, अन्धेरे से अन्धेरे को क्या समाप्त किया जा सकता है? मेरा विश्वास है कि सत्य एकमात्र ऐसी शक्ति है जो कभी प्रभावित नहीं हो सकती। सकारात्मक सोचना या न सोचना यह हमारे दिमाग के नियंत्रण में है और हमारा दिमाग हमारे नियंत्रण में है। सब कुछ हमारे आचरण के आधार पर है क्योंकि सीढ़ियां हमेशा ऊपर की ओर नहीं जाती हैं। वर्तमान समाज में दुर्भाग्यवश जातिवाद, क्षेत्रवाद, असहनशीलता, अस्वीकृति, अनैतिकता, नशाखोरी, अश्लीलता, अहम एवं हिंसा की संकीर्ण भावनाएं स्पष्ट रूप से नज़र आती हैं, इसलिए मेरा विचार है कि :- 'आप तकनीकी रूप से सर्वश्रेष्ठ हो सकते हैं, अगर आप व्यावहारिक नहीं तो आप मानवता पर बोझ हैं।' ◆◆◆

मोटर व्हीकल संशोधन बिल 2019

नए मोटर वाहन नियम

आपने अक्सर महसूस किया होगा कि बहुत से व्यक्ति दोपहिया चालकों को हाथ गोल-गोल कर, उंगलियों के माध्यम से यह बताने की कोशिश करते हैं कि हेडलाइट जल रही है। जानकारी के लिए कि दिन में हेडलाइट जलने से वाहन के ऊपर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है। ज्ञानवर्धन के लिए कि दिन में गाड़ियों की हेडलाइट जलने का नियम 1अप्रैल 2017 से लागू कर दिया गया था और इसे ऑटोमोबाइल कंपनियों द्वारा लागू कर दिया गया है। वर्ष 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने बीएस अर्थात भारत स्टेज-3 वाहनों की बिक्री पर रोक लगा दी है क्योंकि यह वाहन ज्यादा प्रदूषण फैलाते थे। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड बीएस मानक तय करता है। बीएस-4 मानकों पर चलने वाले इंजन का नया फीचर यह है कि इसमें वाहन का इंजन स्टार्ट होते ही वाहन की हेडलाईट भी जल जाएगी। जब तक दोपहिया वाहन का इंजन स्टार्ट रहेगा तब तक हेडलाइट ऑन रहेगी। वाहन चालक इसे चाहकर भी बंद नहीं कर पाएंगे। यह स्पष्ट करना अनिवार्य है कि गाड़ियों में दिन में हेडलाईट जलाने का नियम यूरोपीय देशों में पहले से ही लागू है जिसके कारण वहां पर वाहन दुर्घटनाएं कम होतीं हैं। दिन में हेडलाईट जलने से धूल, बरसात, घने कोहरे और भारी ट्रैफिक में वाहन चालक दूसरे वाहनों को आसानी से पहचान पाएंगे। इसके अलावा सामान्य मौसम में भी जब सामने से आ रहे वाहन की लाइट चमकती है तो सामने वाला सतर्क हो जाता है जिससे एक्सीडेंट की संभावना कम हो जाती है। अगर सरकार द्वारा इस नियम को सामान्य जनता पर लागू कर दिया जाता है तो सर्वप्रथम पुराने मॉडल की गाड़ियां बंद हो जाएंगी और विकल्प के रूप में पुराने वाहनों को हेडलाइट को मेनुअली ऑन रखना अनिवार्य होगा। यहां तक कि दिन में दोपहिया वाहन में 'लाइट आर्फ' मिली तो ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन माना जाएगा और इसके लिए जुर्माना भी होगा। लेकिन बीएस उत्सर्जन मानक भारत सरकार द्वारा स्थापित किए गए हैं। इस उत्सर्जन मानक के माध्यम से मोटर वाहनों के कारण होने वाले वायु प्रदूषण की मात्रा की व्याख्या की जाती है। शीघ्र ही भारत में बीएस-4 के बाद अब बीएस-6 लागू होगा, जिससे वाहनों के फ्यूल से निकलने वाले प्रदूषण पर नियंत्रण लगेगा। कुछ नई तकनीकों के साथ भारत स्टेज बीएस-6 देशभर में प्रभावी हो जाएंगे। देश में वायु प्रदूषण को कम करने की कोशिश के साथ यह सरकार का लोगों के स्वास्थ्य के प्रति भी एक ईमानदार प्रयास होगा। ◆◆◆

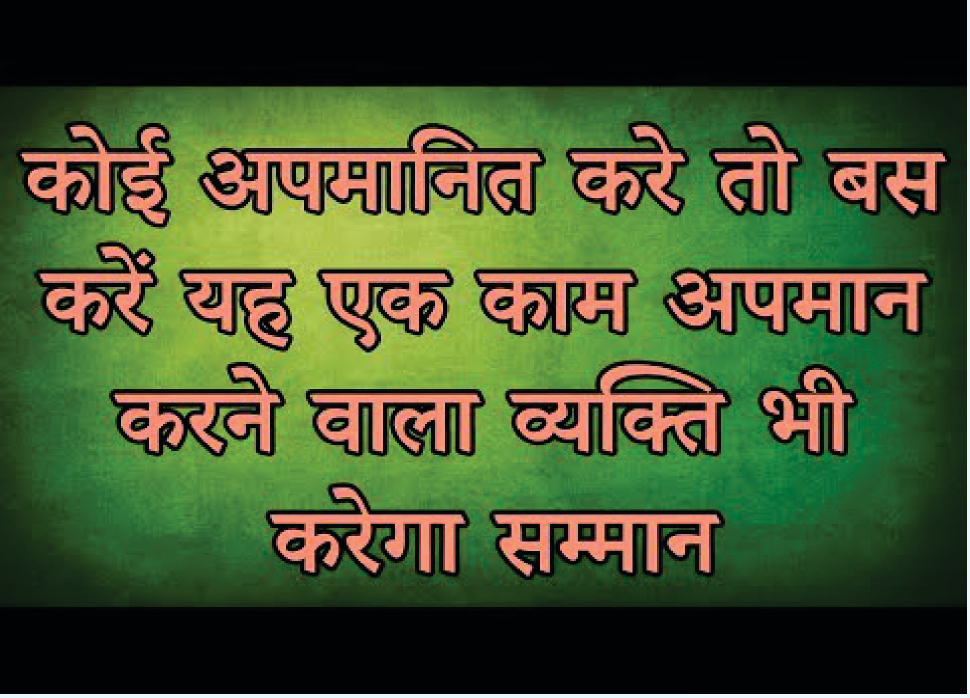

भाई अब 50की पीढ़ी को समझदारी की जरुरत

समझदार होने की जरूरत है। इस तरह के केस हर दूसरे घर की कहानी हो गई है। एक ऐसा ही सच्चा किस्सा आप को बताता हूं कृपया पढें व अन्य बुजुर्गो को अवश्य भेजें' मेरे एक दोस्त के माता-पिता बहुत ही शान्त स्वभाव के थे मेरा मित्र उनकी इकलौती संतान था उसकी शादी हो चुकी थी। व उसके दो बच्चे थे। अचानक मां का देहांत हो जाता है। एक दिन मेरा मित्र अंकल को कहता है कि पापा आप गैरेज में शिफ्ट हो जाओ क्योंकि आपकी वजह से आपकी बहू को परेशानी होती है। माताजी के गुजरने के बाद घर के सारे काम उसे करने पड़ते हैं। और आपके सामने उसे साड़ी पहन कर कार्य करने में परेशानी होती है। अंकल बिना कोई बात किये गैरेज में शिफ्ट हो जाते हैं। करीब पन्द्रह दिन बाद बेटे को बुलाकर दस दिन का उसके पूरे परिवार के लिए विदेश ट्रिप का पास देते हैं और कहते हैं कि जा बेटा सभी को घुमा ला सभी का मन हल्का हो जाएगा। पुत्र के जाने के बाद अंकल ने अपना छ: करोड़ का मकान तुरंत तीन करोड़ में बेच दिया। अपने लिए एक अपार्टमेंट में अच्छा फ्लैट लिया। तथा बेटे का सारा सामान एक दूसरा फ्लैट किराये पर ले कर उसमें शिफ्ट कर दिया। जब बेटा घूम कर वापस आया तो घर पर एक दरबान बैठा था उसने बेटे को बताया कि यह मकान तो बिक चुका है। जब बेटे ने पिता को फोन लगाया तो वह बन्द आ रहा था। उसे परेशानी में देख गार्ड बोला क्या पुराने मालिक को फोन कर रहे हो। उसके हां कहने पर वह बोला भाई उन्होंने अपना नंबर बदल लिया है आपके आने पर आपसे बात कराने की बोल कर गये थे। और गार्ड ने अपने फोन से नंबर लगा कर मेरे मित्र की अंकल से बात कराई फोन पर अंकल ने उसे वहीं रुकने के लिए कहा। थोड़ी देर में वहां एक कार आकर रुकी उसमें से अंकल नीचे उतरे उन्होंने मेरे मित्र को उसके किराये वाले फ्लैट की चाबी देते हुए कहा कि यह रही तेरे फ्लैट की चाबी, एक साल का किराया मैंने दे दिया है अब तेरी मर्जी हो वैसे अपनी पत्नी को रख। और यह कह कर अंकल जी वहां से चले गए। और मेरा मित्र देखता रह गया। यह एक नितांत सत्य जयपुर की ही घटना है अत: अब बुजुर्गो को ऐसे नालायक बच्चों से साफ कह देना चाहिए कि हम तुम्हारे साथ नहीं रह रहे हैं तुम्हें हमारे साथ रहना है तो रहो अन्यथा अपना ठिकाना ढूंढ लो। ◆◆◆

प्रेरक प्रसंग

कर्मयोगी बनो

... -आचार्य श्रीराम शर्मा

कर्मों का नाश नहीं होता। किस्मत से पाए भोगों का परित्याग कोई अर्थ नहीं रखता। अगला जीवन वहीं से शुरू होगा, जहां से तुमने इसे छोड़ा था। आत्महत्या पाप है-उसका दंड यानि अपने कर्म क्षेत्र से बिना नियमित अवकाश का अवसर आए भागने का दंड, दोनों को तुम्हें भोगना ही पड़ेगा।' गुरू ने आत्महत्या की बात कर रहे अपने निराशा में डूबे शिष्य से कहा। वह दोनों घुटनों के बीच सिर रख रो रहा था। उसकी वेदना निस्सीम दिखती थी। 'मेरे बच्चे' महापुरूष के अमृतस्पंदी करों ने उसके मस्तक का स्पर्श किया। उनकी जीवन संचारिणी वाणी ने कानों में अमृत उड़ेला-'तुम व्यर्थ अधीर हो रहे हो। जीवन उसका है, जो दृढ़ता से उसे अपनाता है, जो कठिनाइयों के मस्तक पर अपने मजबूत पांव जमाकर खड़ा हो सकता है। जीवन अधीर और भीरू का नहीं। वह कर्मयोगी का है।' गुरू की महिमा ने उसके भीतर नया जीवन भर दिया था। वह उसी क्षण अपने इरादों से एक कर्मयोगी बन चुका था। ◆◆◆

धारा 370 का हटना राष्ट्र एकता एवं अखंडता की दृष्टि से महत्वपूर्ण

... -वरूण शर्मा

जम्मू-कश्मीर, आतंकवाद के साए में घिरा एक प्रदेश, भारत का एक अंग होते हुए भी लगभग सत्तर वर्ष तक भारत से अलग-थलग बना रहा। आतंकवाद रूपी राक्षस से कश्मीर की स्वर्ग से भी सुंदर मानी जाने वाली घाटी को हमेशा से ही खतरा रहा है। इससे भी अधिक खतरा कश्मीर की आम जनता को अपने ही कुछ लोगों, जिन्हें वे मसीहा मान बैठे, उनसे बनता गया। पश्मीना के धागे को संग लेकर ख्वाब बुनने वाले एक आम कश्मीरी के दिलो दिमाग में जो डर बिठा दिया गया, उसी डर को खत्म करने हेतु भारतीय केंद्र सरकार द्वारा एक संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति से भरा प्रस्ताव रखा गया, जिसके आधार पर जम्मू-कश्मीर से धारा 370 को हटा कर भारतवर्ष की एकरूपता को चार चांद लगाने का निर्णय लिया गया है। अनुच्छेद 370 का हटना वर्तमान में देश के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से ही निरंतर प्रयास किए गए और कश्मीर को तत्कालीन शासकों की सर्वसम्मति से भारतवर्ष में शामिल किया गया। यह अलग बात रही कि भारत से भिन्न पाकिस्तान के रूप में एक नया देश उभर कर सामने आया, लेकिन कश्मीर के राजनीतिक आकाओं और शासकों का जो सत्ता की लालसा से भरा भाव रहा, वह लगातार बढ़ता गया और उसकी पूर्ति हेतु वे किसी भी हद तक जाने को तैयार हो गए। सीमा पार से बढ़ती घुसपैठ (कश्मीरी युवाओं को आज़ादी के नाम पर बहला फुसलाकर चलाए जा रहे प्रशिक्षण शिविर (विदेशी ताकतों से मिल रही आर्थिक मदद और कुछ पड़ोसी देशों का हमारे सबसे नजदीकी पड़ोसी को समर्थन, इन सबने अखंड भारत की एकता को तोड़ने का निरंतर प्रयास किया)। 1980-90 के दशकों से भारत में बढ़ रही आतंकी घटनाएं इसी का परिणाम हैं। इन्हीं आतंकी घटनाओं से देश की सुरक्षा हेतु वर्तमान मोदी सरकार ने जम्मू कश्मीर से उस धारा 370 को खत्म करने का निर्णय लिया, जिसके कारण यह प्रदेश सारे भारत से कटा हुआ माना जाता रहा है। संसद में जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को पृथक कर, उन्हें विशेष दर्जा देने को लेकर जो प्रस्ताव रखा गया, उसका अनुमोदन लगभग सभी राजनीतिक दलों द्वारा किया गया है, जिससे प्रमाणित होता है कि भारत अंदर से एकजुट है और यहां का हर नागरिक अपने राष्ट्र के प्रति कर्तव्य बोध को समझता है। भाजपा के पिछले कार्यकाल के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी के नेतृत्व में जम्मू-कश्मीर में आतंकी घटनाओं को रोकने हेतु अथक प्रयास किए गए, जिनमें भारतीय थल सेना द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक एवं वर्तमान कार्यकाल में वायु सेना द्वारा की गई एयर स्ट्राईक प्रमुख रही। जिस धारा 370 को खत्म करने का निर्णय लिया गया है, वह धारा जम्मू कश्मीर में आतंकवाद के पनपने का कारण बनी, और इसी कारण से यह आतंकवाद की जड़ कही जा सकती है। धारा 370 की आड़ में कश्मीर के स्थानीय नेताओं और कुछ अलगाववादी संगठनों को धर्म तथा संप्रदाय की राजनीति करने का अवसर मिलता रहा, जिसका उन्होंने भरपूर लाभ उठाया। इन्हीं के बहकावे में आकर आम कश्मीरी के बच्चे पत्थरबाजी में संलिप्त होने लगे, और इन राजनीतिक आकाओं के खुद के बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु विदेशों में पहुंचने लगे। यदि मंथन किया जाए तो जम्मू और कश्मीर की राजनीति केवल दो विशेष दलों और परिवारों तक ही सीमित रही, जबकि आम लोग लगातार आतंकवाद का दंश झेल रहे हैं। कश्मीरी पंडितों की क्या गलती रही, जो उन्हें उन्हीं के घरों से निकाला गया (इसमें आम कश्मीरी की क्या गलती है, जो वह कश्मीर में पैदा हुआ, और कुछ विशेष अधिकार प्राप्त लोगों की चाटुकारी

करने हेतु मजबूर है?) इन सब विषयों पर यदि ध्यान आकर्षित किया जाए तो यह निष्कर्ष निकल कर सामने आता है कि 370-धारा घाटी के लोगों की प्रगति में बाधक है।

धारा 370 और 35 ए निश्चित तौर पर कश्मीरियों की प्रगति में बाधक बन रही थी, और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा गया, जिस कारण कश्मीर के साथ-साथ लद्दाख की जनता भी त्रस्त थी। लद्दाख की बात की जाए और पर्यटन को छोड़ दिया जाए, तो इस क्षेत्र के लोग काफी हद तक भारत से कटे हुए थे। आज जब लद्दाख को विशेष दर्जा देने की बात आई है, कश्मीरी नेताओं की भौंहें तन उठी हैं। इन कश्मीरी शासकों द्वारा जो भेद-भाव लद्दाख से, वहां की जनता से किया गया, उसे मिटाने हेतु धारा 370 का हटना एक महत्वपूर्ण कदम है। जम्मू-कश्मीर में फैली आतंकवाद की जड़ों को खत्म करने की दिशा में भारतीय सेना ने हज़ारों कुर्बानियां दी। सन् 1947 के बाद से 1965, 1971 तथा 1999 का कारगिल युद्ध जम्मू कश्मीर में बढ़ रहे आतंकवाद को मिटाने हेतु लड़े गए। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जिस काले कानून को हटाने के लिए अपना बलिदान दिया, जिसे हटाने के लिए भरसक प्रयास किए गए, आज यदि उस धारा के खात्मे का समय आ चुका है, तो यह भारतवर्ष की एकता एवं अखंडता को और अधिक मजबूत करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। जम्मू कश्मीर नि:संदेह भारतवर्ष का अभिन्न अंग है। देश के गृह मंत्री अमित शाह ने कश्मीर को देश के मुकुट मणि की संज्ञा दी, और यह निश्चित किया कि देश कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक सूत्र में पिरोया है। धारा 370 एक प्रदेश की प्रगति में बाधक होने के साथ ही राष्ट्र की उन्नति में बाधक है, इस बात को समझ लेने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में आज यदि जम्मू-कश्मीर को शेष भारत से पूर्ण रूप से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है, तो यह जम्मू-कश्मीर की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है। ◆◆◆

प्रजा परिषद् का ऐतिहासिक आंदोलन

बलिदानों और संघर्षों को याद करते हुए अनुच्छेद 370 के दुरुपयोग से उत्पन्न संवैधानिक विसंगतियों को दूर करने के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. प्रेमनाथ डोगरा जी के नेतृत्व में प्रजा परिषद का ऐतिहासिक आंदोलन, जम्मू कश्मीर सहित भारत के देशभक्तों ने सतत संघर्ष किया, बलिदान दिया यातनाएं सही, उन सभी का हम कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करते हैं।

अनुच्छेद 370 से जुड़ा एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि 370 के प्रश्न पर न बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर सहमत थे न ही सरदार वल्लभ भाई पटेल। इसके साथ साथ संविधानसभा के अधिकांश लोग भी 370 से असहमत थे।

यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि इसके पक्ष में अनेक ऐसे दल भी आए जो रा.ज.ग. का हिस्सा नहीं हैं। बीजद, बसपा, वाईएसआर, अन्नाद्रमुक ऐसे दल हैं- जबकि जनता दल यू ने इसका विरोध तो किया लेकिन रा.कां पार्टी की तरह मतदान में भाग नहीं लिया। तृणमूल कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और राजद भी विरोध में रहे। पर कांग्रेस के लिए चिन्ता का विषय है कि महासचिव ज्योतिरादित्य, पूर्व महासचिव जनार्दन द्विवेदी, दीपेन्द्र हुड्डा, मिलिन्द देवड़ा आदि ने पार्टी लाइन से हटकर विधेयक का समर्थन किया। राज्यसभा में कांग्रेस के मुख्य सचेतक श्री भूवनेश्वर कलिता ने तो यह कहते हुए राज्यसभा से ही त्यागपत्र दे दिया कि वे इस पाप में भागीदार नहीं होंगे।

अनिल शास्त्री ने कहा मंडल का विरोध करके हमने बिहार और उ. प्र. गवायांकृ इसका विरोध करके हम सारे देश से खारिज हो जाएंगे। ◆◆◆

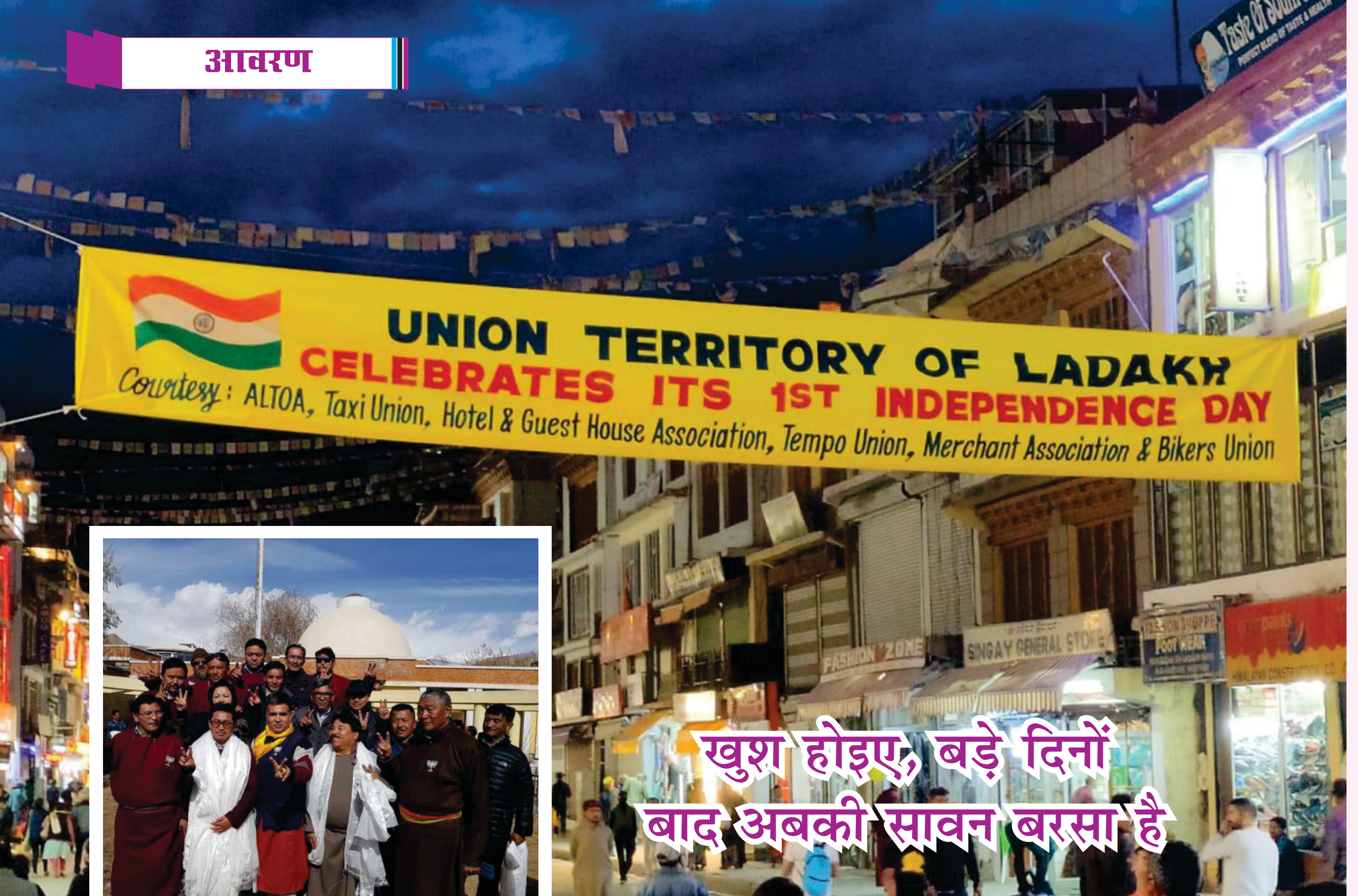

खुश होइए, बड़े दिनों बाद अबकी सावन बरसा है

... -सर्वेश तिवारी

धारा 370 की समाप्ति मात्र एक संवैधानिक बदलाव नहीं है, युगों की परतंत्रता के बाद महाराज ललितादित्य मुक्तपीठ की धरा स्वतंत्र हुई है, मुक्त हुआ है उनका बनवाया वह विश्व का सबसे बड़ा मार्तण्ड मंदिर, जिसे कुछ अभद्र अब 'शैतान का घर' कहने लगे थे। मुक्त हुई है हम सब के परदादा महर्षि कश्यप की वह भूमि, जो आधिकारिक रूप से हमारी 'पुस्तैनी घराड़ी' होने के बाद भी हमारी नहीं थी।

मुक्त हुई है महान शैव दर्शन के प्रणेता वसुगुप्त की धरा... किल्लट और सोमनन्द की माटी... पतंजलि, क्षेमराज और कल्हण जैसे विद्वानों की धरा...मुक्त हुआ है महाराजा रणजीत सिंह का कश्मीर...

आज उन असंख्य कश्मीरी हिन्दुओं की आत्मा को शान्ति मिली होगी, जिन्हें 1989-1992 में मार दिया गया था, जिनकी स्त्रियों को लूट लिया गया था। आज उन असंख्य योद्धाओं की आत्मा को शान्ति मिली होगी जिन्होंने कश्मीर की सीमा को अपने रक्त से धोया था। आज उन असंख्य देवियों की वर्षों से जलती छाती ठंडी हुई होगी जिन्होंने इसी कश्मीर की बलिवेदी पर अपना पति या बेटा चढ़ाया था।

आज तृप्त हुई होगी कश्मीर में बलिदान होने वाले पण्डित श्यामा प्रसाद मुखर्जी की आत्मा, आज पूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी तृप्त हुए होंगे। आज भारत की छाती ठंडी हुई है। हुत पुरानी बात नहीं है, मात्र पाँच-छह सौ पीढ़ी पूर्व मेरे पूर्वज कश्मीर की नीलम घाटी के शारदा वन में 'हरि ऊँ स्वस्ति न: इन्द्रो... ' का पाठ करते थे। आज तक उस परतन्त्र कश्मीर की अपनी डीह पर जाना तो दूर, हम जाने की सोच भी नहीं सकते थे, पर अब सोच सकते हैं। अब सम्भव है कि कुछ वर्षों बाद कोई श्रीमुख शाण्डिल्य गोत्रीय व्यक्ति अपने पूर्वजों की माटी पर श्रद्धा के फूल चढ़ाने जा सके। अब सम्भव है कि महर्षि कश्यप की संतति अपने पुरखों की माटी पर माथा टेक सके।

आज खुश होने का दिन है। खुश होइए कि अब कश्मीर सचमुच हमारा है। खुश होइए इस विश्वास के साथ, कि कल डल झील के किनारे भी माथे से नाक तक सिंदूर लपेटे कोई स्त्री 'उगीं ना सुरुज देव भइले अरघ के बेर...' गाती हुई छठ पूजा करेगी। खुश होइए इस स्वप्न के साथ कि कुछ वर्षों के बाद कोई दूसरा ललितादित्य मुक्तपीठ प्राचीन मार्तण्ड मंदिर के ध्वंसावशेषों पर नई ईंट रखेगा। और खुश होइए इस बात के लिए भी, कि आपने मोदी को चुना था। मेरे गाँव के बूढ़े बड़े गर्व से बताते हैं कि हमने वह दिन देखा है जब तिरानबे हजार पाकिस्तानी सैनिक इंदिरा के आगे समर्पण किये थे। हम जब बूढ़े होंगे तो उतने ही गर्व से अपने नाती-पोतों को बताएंगे कि हमने मोदी-शाह को देखा है। हमने 5 अगस्त 2019 देखा है। हमने कश्मीर को स्वतंत्र होते देखा है, हमनें इतिहास बनते देखा है। ◆◆◆

अनुच्छेद 370 तब और अब

-चेतन कौशल

भारत को स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् 15 अगस्त 1947 को जम्मू- कश्मीर भी स्वतंत्र हो गया था। उस समय यहां के शासक महाराजा हरि सिंह अपने प्रांत को स्वतंत्र राज्य बनाए रखना चाहते थे। लेकिन 20 अक्तूबर 1947 को कबायलियों ने पाकिस्तानी सेना के साथ मिलकर कश्मीर पर आक्रमण करके उसका बहुत सा भाग छीन लिया था। इस परिस्थिति में महाराजा हरि सिंह ने जम्मू-कश्मीर की रक्षा हेतु शेख अब्दुल्ला की सहमति से जवाहर लाल नेहरु के साथ मिलकर 26 अक्तूबर 1947 को भारत के साथ जम्मू-कश्मीर के अस्थाई विलय की घोषणा करके हस्ताक्षर किये थे। इसके साथ ही भारत से तीन विषयों रक्षा, विदेशी मुद्दे और संचार के आधार पर अनुबंध किया गया कि जम्मू-कश्मीर के लोग अपने संविधान सभा के माध्यम से राज्य के आंतरिक संविधान का निर्माण करेंगे और जब तक राज्य की संविधान सभा शासन व्यवस्था और अधिकार क्षेत्र की सीमा निर्धारण नहीं कर लेती है तब तक भारत का संविधान केवल राज्य के बारे में एक अंतरिम व्यवस्था प्रदान कर सकता है।

उस समय डा0 अम्बेडकर देश के पहले कानून मंत्री थे। उन्होंने शेख अब्दुल्ला से कहा था, तो आप चाहते हैं कि भारत आपकी सीमाओं की सुरक्षा करे, आपके यहां सड़कें बनवाए, आपको अनाज पहुंचाए, देश में बराबर का दर्जा भी दे लेकिन भारत की सरकार कश्मीर पर सीमित शक्ति रखे, भारत के लोगों का कश्मीर पर कोई अधिकार न हो। इस तरह के प्रस्ताव पर भारत के हितों से धोखाधड़ी होगी। देश का कानून मंत्री होने के नाते मैं ऐसा हरगिज नहीं कर सकता।' वर्ष 1951 में महिला सशक्तिकरण का

हिंदू संहिता विधेयक पारित करवाने के प्रयास में असफल रहने पर स्वतंत्र भारत के इस प्रथम कानून मंत्री ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। देश का स्वरूप बिगाड़ने वाले इस प्रावधान का डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कड़ा विरोध किया था। 1952 में उन्होंने नेहरु से कहा था, 'आप जो करने जा रहे हैं, वह एक नासूर बन जाएगा और किसी दिन देश को विखंडित कर देगा। वह प्रावधान उन लोगों को मजबूत करेगा, जो कहते हैं कि भारत एक देश नहीं, बल्कि कई राष्ट्रों का समूह है।' अनुच्छेद370 को भारत के संविधान में इस मंशा के साथ मिलाया गया था, जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जम्मू-कश्मीर राज्य के संबंध में प्रावधान केवल अस्थाई हैं। उसे 17 नवंबर 1952 से लागू किया गया था।

डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी को यह सब स्वीकार्य नहीं था। वे जम्मू-कश्मीर राज्य को भारत का अभिन्न अंग बनाना चाहते थे। उस समय जम्मू-कश्मीर राज्य का अलग झण्डा और अलग संविधान था। संसद में डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अनुच्छेद 370 को समाप्त करने की जोरदार वकालत की थी। अगस्त 1952 में जम्मू की विशाल रैली में उन्होंने संकल्प व्यक्त किया था, या तो मैं आपको भारत का संविधान प्राप्त करवाऊंगा या फिर इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना जीवन बलिदान कर दूंगा'। वे जीवन पर्यन्त अपने दृढ़ निश्चय पर अटल रहे। वे अपना संकल्प पूरा करने के लिए 1952 में बिना परमिट लिए जम्मू-कश्मीर की यात्रा पर निकल पड़े। वहां पहुंचते ही उन्हें गिरफ्तार करके नजरबंद कर दिया गया। वहां पर 23 जून 1953 को रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई।

अनुच्छेद 370 के अनुसार जम्मू-कश्मीर राज्य भारत का राज्य तो है लेकिन वह राज्य के लोगों को विशेष अधिकार और सुविधाएं प्रदान करता है

जम्मू-कश्मीर में प्रायोजित आतंक का मुख्य कारण वहां के कुछ अलगाववादी नेताओं के स्वार्थी हित रहे हैं। वे अलगाववादी नेता पाकिस्तान के निर्देशों पर जम्मू-कश्मीर के गरीब लड़कों को देश के विरुद्ध भड़काते हैं और उन्हें आतंक का मार्ग चुनने को बाध्य करते हैं। जबकि वे नेता अपने लड़कों को विदेशों में पढ़ाते हैं।यह सिलसिला 5 जुलाई 2019 तक निरंतर चलता रहा है और प्रसन्नता की बात यह है कि इसके आगे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के अथक प्रयासों से डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का संकल्प पूरा होने जा रहा है। मोदी सरकार ने जम्मू-कश्मीर राज्य के लद्दाख क्षेत्र को 31 जुलाई 2019 को अलग से केंद्र शासित राज्य घोषित कर दिया है।समय की आवश्यकता है-कश्मीर के लोग इन अलगाव वादी नेताओं के स्वार्थी हितों को समझें और भारत का लघु स्विटजरलैंड कहे जाने वाले इस प्रदेश में पुनः सुख-शांति की स्थापना हो। ◆◆◆

युवा राष्ट्र का निर्माता

युवा राष्ट्र का निर्माता है और किसी राष्ट्र की उन्नति का आधार युवाओं को ही माना जाता है। इसी विषय को लेकर 7 जुलाई को युवा लेखक मंच नूरपुर तथा गुंजन एफ.एम. रेडियो एवं सामुदायिक सेवा केंद्र धर्मशाला के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्र के निर्माण में युवाओं की भूमिका संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता कार्यक्रम के मुख्यातिथि कर्नल यशपाल पठानिया द्वारा की गई। कार्यक्रम में भारत को एक सशक्त राष्ट्र बनाने में युवाओं की भूमिका और भागीदारी को लेकर चिंतन किया गया, जिसमें श्री शक्तिचंद राणा 'शक्ति', डॉ इन्द्र सिंह ठाकुर, प्रो. भाग चंद चौहान, डॉ अर्चना कटोच, डॉ राकेश कुमार शर्मा, डॉ. सुमन शर्मा और अन्य अतिथियों के द्वारा अपने विचार रखे गए। कार्यक्रम में पुस्तक 'सुल्याली गांव और डिहबकेश्वर महादेव, एक ऐतिहासिक अवलोकन' पुस्तक का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम में 'युवा लेखक मंच' के रवि कुमार, संयोजक वरुण शर्मा और सचिव चेतन कौशल मुख्य रूप से उपस्थित रहे। ◆◆◆

हिमाचल में भी आर्थिक रूप से पिछड़े सवर्णों को 10 फीसदी आरक्षण

राज्य सरकार ने आर्थिक रूप से पिछड़े सवर्णों को सरकारी नौकरी में 10 फीसदी आरक्षण को लागू कर दिया है। इसके तहत सरकारी क्षेत्र में प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ श्रेणी पदों पर भर्ती में लाभ मिल सकेगा। इस श्रेणी में वह लोग आएंगे, जिनके परिवार की वार्षिक आय 4 लाख से कम हो और वह अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए पहले से तय आरक्षण के दायरे में न आते हों।

गरीब परिवार के पास गांव में 1 हैक्टेयर तथा शहर में 500 वर्ग मीटर से अधिक भूमि नहीं होनी चाहिए। सरकारी विभागों के अलावा निगम बोर्ड में सीधी भर्ती से होने वाली भर्ती में आरक्षण लागू होगा। केंद्र व राज्य के नियमित और दैनिक भोगी कर्मचारियों के परिजन आरक्षण लेने के पात्र नहीं होंगे, साथ ही आय की गणना के वक्त कृषि, व्यापार, वेतन व प्रोफेशन से होने वाली आय भी गिनी जाएगी। गांव अथवा शहर में 2500 वर्ग फीट से छोटा मकान होने पर ही आरक्षण का लाभ मिलेगा। ◆◆◆

... -सुरेंद्र शर्मा

वर्धमान समूह ने कपड़ा देकर की अभियान की शुरुआत-पुराने कपडों से थैले बनाएंगे बीटीटीआई के छात्र-अरोड़ा

औद्योगिक क्षेत्र बद्दी बरोटीवाला में पॉलीथीन का प्रयोग कम करने के लिए अब बद्दी टैक्नीकल ट्रेनिंग इंस्टीटयूट आगे आया है। सरकार की सहायता से चल रहा यह संस्थान अब पूरे बद्दी बरोटीवाला से पुराने वस्त्र एकत्रित करके उस कपड़े के झोले तैयार करेगा और उन्हें लोगों को वितरित करेगा। इसका उद्देश्य सिर्फ इतना होगा कि लोग जब भी बाजार में सब्जी व अन्य सामान खरीदने जाएं तो साथ में थैला लेकर जरुर जाएं। थैले न होने की वजह से हर घर में रोजाना तीन से चार पोलीथीन घर में आ जाते हैं। हालांकि सरकार ने एक दशक पहले पोलीथीन पर प्रतिबंध लगा रखा है परन्तु यहां हर छोटी बड़ी दुकान में पोलीथीन सरेआम मिलता है। इन्ही सब मुद्दों को लेकर बीटीटीआई ने बीबीएन उद्योग संघ के साथ मिलकर पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की मुहिम शुरु की है। इसके लिए बद्दी के वर्धमान समूह ने 250 किलो नया कपड़ा देकर अपनी आहुति डाली है। अब बीटीटीआई में चल रहा फैशन डिजाईनिंग विभाग जिसमें 57 छात्राएं सिलाई कढ़ाई का हुनर सीख रही हैं, इस कपड़े के बैग बना रही हैं। बद्दी इंफ्रा के सीईओ विजय अरोड़ा व बीटीटीआई के प्रधानाचार्य जयदीप अग्रवाल ने बताया कि पहले सत्र में हमने सौ से ज्यादा बैग बनाकर महिला संगठनों को सौंपे ताकि उसका प्रचार-प्रसार हो सके। हमें इस कार्य के लिये हर छोटे-बड़े व्यक्ति की जरुरत है जो कि पर्यावरण का महत्व समझता है।◆◆◆

मुख्यमंत्री खट्टर की बहन ने महिलाओं को सम्मानित किया

...✍ -शांति गौतम

पत्रकार एकता मंच परिवार की तरफ से महिलाओं के लिए शुक्रवार 2 अगस्त को पंचकुला के होटल जेम्स में, तीज उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।पत्रकार एकता मंच के संयोजक जगरूप सिंह सहरावत ने बताया कि कार्यक्रम की मुख्यातिथि हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर की बहन वीना अरोड़ा रही। हरियाणवी परिधान में जो महिलाएं आई थी उनको मुख्यातिथि द्वारा सम्मानित किया गया। झूले और डीजे व हरियाणवी संस्कृति की यहां विशेष झलक दिखाई दी। । बीबीएन से कविता शर्मा,हिसार से सहकारिता प्रकोष्ठ की अध्यक्षा निर्मला दहिया,लुधियाना से गुरुबल कौर, मनदीप कौर, बलजीत,उपासना शर्मा, डॉ विक्रम जीत सिंह ढींगरा, शांति गौतम,संजीव कुमार सहित अन्य गणमान्य इस कार्यक्रम में मौजूद रहे। ◆◆◆

कुल्लू जिला प्रशासन शुरू करेगा वेस्ट टू टेस्ट कैफे

जिला प्रशासन ने कुल्लू शहर को साफ-सुथरा बनाने के लिए अनूठी योजना वेस्ट टू टेस्ट कैफे तैयार की है। शनिवार से शुरू हो रही इस योजना का क्रियान्वयन नगर परिषद् कुल्लू करेगी। नगरवासियों से घरों में पड़ी बेकार वस्तुएं देने पर उन्हें कूपन मिलेगा। कूपन से उन्हें शहर के अच्छे रेस्तरां में स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाने का अवसर मिलेगा। इन व्यंजनों में कॉफी, सिड्डू, पिज्जा, बर्गर व आइसक्रीम के अलावा परिवार के चार सदस्यों के लिए शानदार डिनर शामिल होगा। कूपन धारक व्यक्ति को ये व्यंजन कुबेर फॉस्ट फूड, ज्ञानी आइसक्रीम, बुक कैफे और सिटी च्वाइस होटल से उपलब्ध करवाए जाएंगे। प्रशासन ने शहर को साफ रखने के लिए अनूठी पहल की है। योजना को लेकर शहर के लोगों में भी क्रेज है। इनका मानना है कि लोग लंच, डिनर, पिज्जा और बर्गर आदि के लिए बेकार वस्तुओं को फेंकने के बजाय एमआरएफ साइट सरवरी में जमा करेंगे। उपायुक्त डॉ. ऋचा वर्मा ने कहा कि लोग अपने घरों में अथवा आसपास पड़े कचरे को जमा करवा कर व्यंजनों का लुत्फ उठाएं व शहर को स्वच्छ बनाने में योगदान दें। इस कचरे को लोग जगह-जगह फेंक रहे हैं। इससे न केवल शहर दूषित हो रहा है, बल्कि जल स्रोतों पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। कुल्लू-मनाली में हर वर्ष लाखों सैलानी आते हैं। ऐसे में हर व्यक्ति की जिम्मेवारी है कि वह कूड़ा कचरा हर कहीं न डालें।

10 किलो कांच जमा कराने पर परिवार सहित रात्रि भोज करें:-मुफ्त कूपन के लिए सरवरी स्थित एमआरएफस्थल पर बेकार वस्तुओं को जमा करवाना होगा। कॉफी के लिए तीन किलो कांच, आधा किलो प्लास्टिक, तीन किलो गत्ता और दो किलो ई-बेस्ट में से कोई एक वस्तु, लंच अथवा सैंडविच के लिए कांच पांच किलो, प्लास्टिक डेढ़ किलो, चार किलो गत्ता और तीन किलो ई-वेस्ट में से कोई एक वस्तु जमा करवानी होगी। परिवार सहित रात्रि भोज के लिए 10 किलो कांच, तीन किलो प्लास्टिक, सात किलो गत्ता या फिर छह किलो ई-कचरा देना होगा। ◆◆◆

-कौशिक

जॉब सीकर नही जॉब क्रिएटर बनें युवा

लघु उद्योग भारती की युवाओं से अपील, सराहां में केंद्र व प्रदेश की सरकार ने युवाओं व महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने के मकसद से कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। सरकार का मकसद है कि युवा जॉब सीकर नहीं बल्कि जॉब क्रिएटर बनें। इसी उद्देश्य को लेकर लघु उद्योग भारती हिमाचल प्रदेश द्वारा सराहां (सिरमौर) में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के तौर पर लघु उद्योग भारती ग्राम शिल्प उद्योग के प्रदेशाध्यक्ष एन.पी कौशिक उपस्थित हुए। एमएसएमई के सहायक निदेशक वजीर सिंह ने विशेष तौर पर उपस्थित होकर घरेलू एवं कुटीर उद्योग चलाने वाली छह दर्जन से ज्यादा महिलाओं व पुरुषों को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम् उद्यम मंत्रालय की नीतियों की मूलभूत जानकारी दी। मुख्य वक्ता एन.पी कौशिक ने कहा कि सरकार का उद्देश्य है कि युवा गांव स्तर पर ही घरेलू लघु उद्योग स्थापित करे जहां वह अपने साथ-साथ दूसरे लोगों को भी रोजगार प्रदान कर सकें। भृंगी जनजागरण संगठन के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न स्वयं सहायता समूहों की माहिलाओं ने भाग लिया। जिन्हें हस्तशिल्प, घरेलू व कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के साथ साथ विपणन बारे जानकारी दी गई। एमएसएमई सोलन के सहायक निदेशक वजीर सिंह ने घरेलू व सूक्ष्म उद्योग धंधे का महत्व समझाते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में इनकी काफी संभावनाएं हैं जिसके लिए लघु उद्योग भारती 1994 से कार्यशील है। उन्होंने सरकार द्वारा दी जाने वाली रियायतों के बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि इसके प्रचार-प्रसार के लिए केंद्र सरकार विशेष रियायतें दे रही है जो उद्योग आधार रजिस्ट्रेशन के बाद दी जाती हैं। उन्होने कहा कि एमएसएमई मंत्रालय उद्योगों की प्रदर्शनी लगाने के लिए 95 फीसदी अनुदान स्टाल लगाने के लिए देता है जिसमें 30 हजार रुपये स्टॉल व 15 हजार रुपये किराए के रुप में उद्यमी को मिलते हैं। उधर जिला उद्योग केंद्र नाहन के प्रसार अधिकारी जितेंद्र कुमार ने कहा कि प्रदेश सरकार ने मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना, आरईबीटीपी व पीएमईजीपी योजना की जानकारी दी। इस अवसर पर राज्य सहकारी बैंक शाखा सराहां के प्रबन्धक जगदीश शर्मा ने महिलाओं को बैंक की योजनाओं से अवगत करवाया। इस अवसर पर भृंगी जनजागरण संगठन की निदेशक सूरती चौहान ने भी विचार रखे। उन्होने कहा कि सराहां व आसपास पचास से ज्यादा स्वयं सहायता समूह हैं जो कि बहुत ही अच्छे व सस्ते उत्पाद तैयार करते हैं लेकिन उनको उचित मंच नहीं मिलता। ग्रामीणों के पास इतने पैसे नहीं होते कि वह मंहगी दुकानें लेकर अपने उत्पाद बेच सकें। इस पर लघु उद्योग भारती के प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष नेत्र प्रकाश कौशिक ने कहा कि हमारा संगठन उनकी इस मुददे पर यथासंभव मदद करेगा। ◆◆◆

आरोग्य भारती का प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न

स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करने वाली हिमाचल की अग्रणी सामाजिक संस्था आरोग्य भारती का प्रांतीय अधिवेशन कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में संपन्न हुआ। जिसमें कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व विकास व कार्यकुशलता में निखार लाने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के कुलपति ए.के. सरयाल ने शिरकत की। अपने संबोधन में सरयाल ने कहा कि आरोग्य भारती भारतीय चिकित्सा मूल्यों पर आधारित विधि से कार्य करने वाला एकमात्र अखिल भारतीय संगठन है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में वायु प्रदूषण तथा पर्यावरण प्रदूषण के कारण हर वर्ष तापमान में 2 डिग्री की बढ़ौतरी हो रही है जो कि चिन्ता का विषय है। इसलिए हम सबका मुख्य उद्देश्य जलवायु के प्रदूषण को कम करना होना अति आवश्यक हो जाता है। कार्यशाला में प्रदेश व देश के आर्युवैदिक, ऐलोपैथिक व होम्योपैथिक से जुड़े कई विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता व राष्ट्रीय संगठन मन्त्री अशोक वार्सने ने संगठन की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने अपने संबोधन में कुशल वक्ता कैसे बनें पर बहुत ही मार्मिक तरीके से विचार प्रस्तुत किये तथा सभी प्रान्तीय अधिकारियों सहित जिला पदाधिकारियों को आने वाले छः महीनों में सक्रिय कार्यकर्ताओं की संख्या को दोगुना करने का लक्ष्य दिया। विशेषकर चिकित्सा पद्धति के इलावा अन्य विविध क्षेत्रों में रूची रखने वाले लोगों को आरोग्य भारती से जुड़ने का आह्वान भी किया। आरोग्य भारती के राष्ट्रीय सचिव डाक्टर राकेश पंडित ने राज्य कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए डा. अनिल मेहता व डा. बलिराम शर्मा को राज्य उपाध्यक्ष, डा. आरती कौन्डल एवं डा. अनिल भारद्वाज को राज्य सह-सचिव की जिम्मेवारी सौंपी। हिमाचल प्रान्त अध्यक्ष चमन सिंह चौहान ने कहा कि संगठनात्मक दृष्टि से 17 जिलों के कुल 93 कार्यकर्ताओं ने इस कार्यशाला में हिस्सा लिया। अन्त में प्रान्त सचिव डा. हेमराज ने आये हुए सभी वक्ताओं, पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं का धन्यवाद किया। इस दौरान राष्ट्रीय संगठन मन्त्री डाक्टर अशोक वार्सने, कृषि विवि पालमपुर के वी.सी ए.के. सरयाल, राष्ट्रीय सचिव डा. राकेश पन्डित, डा. चमन सिंह चौहान, डा. हेमराज, स्वस्थ ग्राम मित्र आयाम के प्रान्त प्रमुख डाक्टर रोहताश चन्द्र, राज्य आरोग्य मित्र प्रशिक्षण प्रमुख प्रकाश चन्द, डा. अजय पाठक, डाक्टर प्रमोद आपटे, डाक्टर आर्दश भार्गव, डा. प्रताप मोहन, डाक्टर देसराज, किशोर ठाकुर, डा.राजेश राणा सहित अनेक गणमानन्य लोग मौजूद थे। ◆◆◆

गौ सेवा के लिए 250 बीघे में चलाए जा रहे प्रकल्प को नियमित रूप से चलाने के लिए सेवानिवृत्ति के बाद पूर्ण कालिक मास्टर कमल देव ने संभाली है कमान। नालागढ़ के साथ लगते जिला बिलासपुर के अंतर्गत पंजाब की सीमा के साथ स्थापित श्री शक्ति गोविंद गौशाला में गौवंश संरक्षण में अहम भूमिका निभा रही है। नंगल के निकट हिमाचल के जंगल में स्थापित इस गौशाला में आज गौवंश का संवर्धन इस प्रकार किया जा रहा है जो कि अन्य लोगों के लिए मिसाल बन चुका है। बियाबान व सुनसान जंगलों में जहां पहुंचना भी मुश्किल है वहां पर कुछ ग्रामीणों ने बंद पड़ी गौशाला को न सिर्फ शुरु किया बल्कि आज उनकी मेहतन का नतीजा है कि यहां पर 200 गायों की पालना कर अनूठी मिसाल पेश की जा रही है। गौशाला कमेटी के संचालक मास्टर कमल देव शर्मा, खुशीराम व हेमराज शर्मा के समक्ष यह बात आई कि सरकार द्वारा स्थापित इस गौशाला का संचालन ठीक ढंग से नहीं हो रहा, जिसके बाद इन्होंने इसको संवारने का बीड़ा उठाया और आज उनकी मेहनत का परिणाम जनता के सामने है। हर कोई बोलता है कि गौमाता को बचाओ लेकिन जब करने की बात आती है तो लोग पीछे हट जाते हैं। यहां पर जीर्ण-शीर्ण गौशाला को जन सहयोग से दुरुस्त करके आज देखने लायक बनाया है जिसके कारण यह दो सौ गायों की शरणस्थली बनी है। गत दिनों यहां पर गौ सेवा संगम का आयोजन हुआ जिसमें श्री श्री 1008 स्वामी सच्चिदानंद महाराज खन्ना वाले तथा स्वामी कृपालानंद महाराज जी दड़ौली वालों ने शिरकत की। इस दौरान गौशाला में तूड़ी संग्रहण के लिए विशाल शैड के निर्माण के लिए 10 लाख रुपये इकठ्ठे हुए। यह शैड तैयार हुआ। इसके कारण गौशाला कमेटी की चिंताए कुछ कम हुई कि अब तूडी को बरसात से बचाकर रखा जा सकेगा। गौ सेवा संगम में स्वामी सच्चिदानंद ने कहा कि जो व्यक्ति गौ सेवा नहीं करता उसे पूजा, जप, तप व यज्ञ का फल कभी प्राप्त नहीं होता। स्वामी कृपालानंद ने कहा कि आज समाज को राम के नाम के साथ राम का काम करने की आवश्यकता है जो कि गौ सेवा द्वारा ही किया जा सकता है। इस अवसर पर पूर्व विधायक रणधीर शर्मा, हरिराम धीमान, महेश कौशल, पंडित राकेश शर्मा, जय गोपाल अत्री, षट्कोण फार्मा के एमडी हितेंद्र कुमार सहित कई गौ भक्त उपस्थित थे। ◆◆◆

आशीष को इनोवेटिव टीचर अवार्ड

शिक्षा के क्षेत्र में आशीष बहल को देश के सबसे बड़े इनोवेटिव टीचर अवार्ड का सम्मान प्राप्त हुआ है। जो 17 अगस्त 2019 को माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री जी के हाथों से मिला। पूरे देश मे 60 शिक्षको को इसके लिए चुना गया था। हिमाचल में ये सम्मान हासिल करने वाले में एक मात्रा हिमाचल के अध्यापक हैं। इससे पहले प्रधानमंत्री कार्यालय की वेबसाइट 'मायगोव इंडिया' में भी मुझे स्थान मिल चुका है जिसमें विद्यालय की कुछ तस्वीरों को सोशल मीडिया के माध्यम से प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा शेयर किया गया जिसमें पर्यावरण दिवस पर पेड़ लगाना इत्यादि शामिल है। मयगोव इंडिया के माध्यम से हिमाचल के प्रसिद्ध मंदिर बाथू की लड़ी पर लिखी मेरी कहानी को फ़ोटो सहित शेयर किया गया था। अभी कुछ दिन पहले भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय द्वारा करवाये गए स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता में मुझे पूरे देश मे पहला रैंक हासिल हुआ जिसमें मुझे 10000 रुपये ईनाम स्वरूप भारत सरकार द्वारा दिए गए। 5 स्कूल में गतिविधि शिक्षा के साथ साथ अपने स्तर पर स्मार्ट क्लास भी शुरू की है। आशीष बहल एक लेखक और कवि भी हैं। कला के क्षेत्रा में आवाज साहित्य सम्मान और सरस साहित्य सम्मान पा चुके हैं। कई रचनायें देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। दिव्य हिमाचल, हिमाचल दस्तक, दैनिक न्याय सेतु दैनिक अखबारों में सम्पादकीय पृष्ठ के लिए लिखता हैं। समाज सेवा के क्षेत्रामें अपने दोस्तों के साथ मिलकर एक संस्था राहुलफ़ैमिली एंड फ्रेंड्स क्लब चला रहे हैं। जिसमें हम इस समय 100 गरीब बच्चों को पढा रहे हैं जिसमें मुख्यत वही बच्चे हैं जिनके माता पिता नही है और विपरीत परिस्थितियों में भी वह अच्छा पढ़ रहे हैं। उनकी मदद कॉलेज स्तर तक की पढ़ाई के लिए की जाती है। ◆◆◆

शिमला की पहाड़ी रियासतों का इतिहास

-उमा ठाकुर

पश्चिमी हिमालय का जो क्षेत्र सतलुज और टोंस नदियों के मध्य फैला हुआ है, 1948 ई0 से पहले वह शिमला की पहाड़ी रियासतों के नाम से ज्ञात था। प्राचीन काल में यह क्षेत्र कुलिन्द जनपद के अन्तर्गत आता था। पूर्व काल से ही यह भू-भाग खशदेश, कुलिन्द देश, हिमाचल, जालन्धर खण्ड आदि नामों से सम्बोधित होता रहा। नौवीं-दसवीं शताब्दी से लेकर पंद्रहवीं शताब्दी तक मैदानी भागों से आये राजपूतों ने इन पहाड़ियों में आकर अपने लिए छोटे-छोटे राज्य स्थापित किए शिमला से उत्तर की ओर अठारह रजवाड़े स्थापित हुए और दक्षिण की ओर बारह रजवाड़े। ये रजवाड़े क्षेत्रफल जनसंख्या, आर्थिक स्थिति के लिहाज से बहुत छोटे और कमजोर होने के कारण ठाकुर और राणा कहलाते थे। छोटे आकार के होने के कारण ये राज्य ठकुराई और रोहण कहलाए जाने लगे। अतः शिमला से उपर की पहाड़ियों में अठारह ठाकुर होने के कारण वह क्षेत्र अठारह ठकुराई कहा जाने लगा और शिमला से नीचे की ओर बारह ठाकुर होने के कारण बारह ठकुराई। इसलिए मध्य काल से लेकर 1815 ई. तक यह क्षेत्र बारह और अठारह ठकुराइयों के नाम से प्रसिद्ध था। कैप्टन सी.पी कनेडी की सूची के अनुसार यह अठारह ठकुराईयां इस प्रकार से हैं:-

1. जुब्बल 2. कोटगढ़/ कोटखाई
3. बलसन 4.रावीगड़ 5. खनेटी
6. करांगला 7. देलठ 8. सारी
9. नावर 10. डोडरा क्वार 11. ठियोग
12.घून्ड 13. पुन्दर 14. भड़ोली 15. बेजा 16. सांगरी 17. दरकोठी
18. थरोच

कैप्टन सी.पी कनेडी की सूची के अनुसार शिमला से नीचे की ओर की बारह ठाकुराईयां इस प्रकार से हैं:-

1. क्योंठल 2.बघाट 3.बाघल
4. कुठाड़ 5. कुम्हारसैन 6. भज्जी
7. महलोग 8. धामी 9. कोटी
10. क्यारी या मधाण 11. कुनिहार
12. मांगल

जुब्बलः- इन ठकुराईयों में सब से महत्वपूर्ण ठकुराई जुब्बल थी जो बुशहर और सिरमौर के मध्य शालवी और विषकलटी नदी घाटियों में फैली थी। जुब्बल रियासत के इतिहास और परम्परा के अनुसार जुब्बल रियासत के संस्थापक के पूर्वज बारहवीं शताब्दी से पूर्व सिरमौर पर राज्य करते थे और राजा का नाम उग्रचन्द था। जुब्बल का अन्तिम राजा दिग्विजय चन्द था 1946-1966. 15 अगस्त 1947 में भारत स्वतन्त्र हुआ तो शिमला पहाड़ी रियासतों में प्रजामण्डल आन्दोलन ने जोर पकड़ा। 8 मार्च 1948 को सभी पहाड़ी राजाओं ने अनुबंध पत्र राजीनामा पर हस्ताक्षर किये और इस के साथ 15 अप्रैल 1948 को जुब्बल राज्य सदा के लिए हिमाचल प्रदेश का अंग बन गया।

कोटखाईः- इस की स्थापना कुम्हारसेन के प्रथम ठाकुर कीरत सिंह के एक वंशज अहीमल ने की। कोटगुरू कोटगढ़ इस ठकुराई का एक भाग था, जो मूल कोटखाई से बहुत दूर था। कोटगढ़ के एक ओर बुशहर, दूसरी ओर कुम्हारसेन और उतर की ओर कुल्लू राज्य थे। इस कारण कोटखाई के राणा को कोटगढ़ का प्रशासन चलाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता था। बुशहर का कोटगढ़ पर कब्जा गोरों के आक्रमण तक रहा। सन् 1810 ई0 तक।

बलसनः- बलसन की ठकुराई प्राचीन सिरमौर राज्य की शाखा थी इसका संस्थापक अलक सिंह था। गोरखों के आक्रमण के समय जोगराज सिंह बलसन का राणा था। बलसन का अन्तिम राजा रण बहादुर सिंह 1936 था। 15 अप्रैल 1948 को बलसन को हिमाचल प्रदेश में मिला लिया गया।

रावींगढ़ ठाकुराईः- इस ठाकुराई की नींव सिरमौर के आखिरी राजा उग्रचन्द्र के तीसरे पुत्र दूनी चन्द ने डाली। यह ठकुराई पब्बर नदी के बायें किनारे और तौंस नदी घाटियों के एक बड़े भाग तक फैली थी।

देलठ ठाकुराईः- देलठ ठाकुराई की परम्परा के अनुसार इस की स्थापना कीरत सिंह के भाई ने की। 1815 में जब अंग्रेजों ने गोरखों को यहां से वापस नेपाल जाने के लिए बाध्य किया तो यह क्षेत्र अंग्रेजों के अधीन हो गया। 8 फरवरी 1816 ई0 की सनद द्वारा यह क्षेत्र बुशहर के अधीन रखा।

सारी ठाकुराईः- प्राचीन सिरमौर के अंतिम राजा उग्रचन्द के दूसरे पुत्र मूलचन्द ने सारी ठकुराई की स्थापना की। इसकी सीमाएं रामपुर-बुशहर के निकट नोगड़ी खड्ड तक फैली थी। 1810 ई0 से 1815 ई0 तक इस क्षेत्र पर गोरखों का आधिपत्य रहा। 1864 ई0 में धर्मसिंह की रानी श्रृगांर मुन्जरी की मृत्यु के पश्चात् सारी राज्य को नजराने पर बुशहर में मिला दिया।

पुन्दर, नावर और डोडरा-क्वार की ठाकुराईः- फ्रेजर ने डोडरा-क्वार और कैप्टन कनेडी ने डोडरा क्वार तथा नावर के नाम भी अठारह ठाकुराई की सूची में दिये हैं। डोडरा क्वार के बारे में फ्रेजर लिखता है कि यहां केवल दो ही गांव है। 1815 में फ्रेजर के समय टीकमदास यहां के कार्य भार को देखता था।

पुन्दर जुब्बल ठाकुराई का एक भाग था। जुब्बल के राणा परस चन्द के समय लगभग 1800 ई0 पुन्दर के लोगों ने किसी कारण राणा के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। गोरखा युद्ध के पश्चात् पहले तो अंग्रेजों ने पुन्दर को अपने पास रखा, परन्तु बाद में इसे शिमला क्षेत्र के बदले क्यूंठल रियासत को दे दिया।

ठियोग मधान और घूण्ड की

ठकुराईयांः- ये तीनों ठकुराईयां उपरी गिरी नदी घाटी पर स्थित थी। गोरखा युद्ध के समय भूपचन्द ठियोग का ठाकुर था। घूण्ड की बुनियाद ठियोग और मधान के संस्थापकों के सबसे छोटे भाई जनजान सिंह ने डाली। 1810 ई0 में गोरखों ने अन्य बारह और अठारह ठाकुराईयों के साथ-साथ इन तीनों पर भी अधिकार कर लिया था। जुब्बल के महल से प्राप्त एक प्रलेख से यह पता लगता है कि पहले बुशहरियों ने रावींगढ़ पर अधिकार किया और उसके पश्चात् गोरखों ने (1810-11) 1896 ई0 में भारत सरकार ने रांवीगढ़ को जुब्बल के अधीन कर दिया।

खनेटी और करांगला ठकुराईः- की स्थापना कुम्हारसैन के संस्थापक कीरत सिंह के वंशज ने की। खनेटी के पारम्परिक इतिहास के अनुसार कीरत सिंह के पुत्र उगम चन्द के तीन सुपुत्र संसार चन्द, सबीर चन्द, और जयसिंह थे। संसार चन्द को करांगला की ठकुराई मिली। सबीर चन्द और जयसिंह दोनों खनेटी आये। दोनों भाईयों ने मिलकर खनेटी, कोटखाई और कोटगढ़ पर राज किया। 19वीं शताब्दी के आरम्भ में यह बुशहर में विलीन हो गया। 1939 के पश्चात् शिमला की पहाड़ी रियासतों में प्रजामण्डल ने जोर पकड़ा। 15 अप्रैल 1948 ई0 को मधान और घूण्ड को मिलाकर ठियोग तहसील बना दी गई।

भरोली, दरकोटी, बेजा ठाकुराईयांः-भरोली की ठाकुराई कहीं बलसन और कोटखाई गोरखा युद्ध के समय जब जेमल बेली प्रेजर (राजनैतिक अधिकारी) कोटखाई में था, तो उसने भरोली ठाकुराई का उल्लेख किया। दरकोटी की छोटी सी ठाकुराई उपरी गिरी नदी घाटी में स्थित थी। इसकी स्थापना एक साहसी दुर्गा सिंह नाम के व्यक्ति ने जयपुर के राज-घराने से आकर की। बेजा 4 वर्ग मील की यह छोटी सी रियासत कसौली पहाड़ की पश्चिमी ढलान में अवस्थित थी। यहां का राजवंश दिल्ली के तोमरवंश से अपना सम्बन्ध जोड़ता है। प्रथम राजा का नाम धोलपाल था जिसकी 37वीं पीढ़ी में शमशेर चन्द हुए जो दिल्ली से कनखल आए। गोरखा आक्रमण के समय 31वीं पीढ़ी में मानचंद राजा था। बेजा में देवी जालपा ठाकुर की कुलदेवी है और देवता बीजू भी बड़ा प्रभाव रखता है।

सांगरी ठकुराईः- सांगरी की ठकुराई कोटगढ़ और कुम्हारसेन के निकट सतलुज नदी की बांई ओर की ढलवान पर स्थित थी। अठारवीं शताब्दी से पूर्व सांगरी एक छोटी ठकुराई थी। कभी इस पर बुशहर का अधिकार हो जाता था तो कभी कुमारसैन का। 1815 के गोरखा युद्ध के पश्चात् जब गोरखा यहां से चले गये तो सांगरी का क्षेत्र भी अंग्रेजों के आधिपत्य में आ गया। 1840 में सिक्खों के कुल्लू में प्रवेश करने पर राजा के लोग अजीत सिंह को सतलुज पार के उसके क्षेत्र सांगरी ले गया। जहां 1941 में उसकी मृत्यु हो गई। बाद में यह भी अठारह ठाकुराइयों में एक रियासत कहलाई।

थरोच ठाकुराईः- थरोच ठाकुराई तौंस और शालनी नदियों के मध्य फैले क्षेत्र में स्थित थी। इसके मूल पुरूष का नाम देवकर्ण था। 1815 में यह अंग्रेजों के आधिपत्य में आ गया। ढाढ़ी ठाकुराई थरोच की प्रशाखा थी। 1896 ई0 में अंग्रेजों ने ढाढ़ी और रावीगढ़ दोनों ठाकुराइयों को जुब्बल के अधीन कर दिया। 15 अप्रैल 1948 को हिमाचल प्रदेश के बनने पर थरोच ठकुराई के क्षेत्र को महासू जिला की तहसील चौपाल में मिला दिया। गुप्तकाल में सारे पहाड़ी क्षेत्र में नया जीवन अंगड़ाईयां लेने लगा था। 1001 ई0 में महमूद गजनवी के भारत आक्रमण से इन पहाड़ी राज्यों में उथल-पुथल शुरू हुई। इसके बाद अंग्रेजों के आगमन के बाद सिखसेना और गोरखों के साथ पहाड़ी राजाओं की आपसी फूट के कारण अनेक युद्ध हुए। परन्तु युगों से रौंदी गई जनशक्ति हाथ पर हाथ धरे बैठी रही हो, ऐसी बात नहीं। सामन्ती यातनाओं का बांध यदाकदा कहीं-कहीं पूरे वेग से फूट पड़ता था। 1825 में कोटगढ़, कोटखाई की जनता ने अपने निरंकुश शासक के विरूद्ध विद्रोह किया। 1859 में बुशहर में विद्रोह हो गया। दिसम्बर 1939 में हिमालय रियासती प्रजामण्डल का संगठन हुआ। शिमला की पहाड़ी रियासतों के राजाओं ने अपने आप को एक संघ के रूप में संगठित करने के लिए जनवरी 1948 के आरम्भ में दिल्ली में एक बैठक की जिसमें यह निर्णय लिया गया कि वे 'शिमला हिल स्टेटस युनियन' बनाये।

केन्द्र सरकार के स्टेटस मन्त्रालय ने 2 मार्च 1948 को शिमला के सभी पहाड़ी राजाओं का एक सम्मेलन दिल्ली में बुलाया और देश की बदलती स्थितियों को देखते हुए उन्हें भारतीय संघ में विलीन होने का परामर्श दिया। सभी शासकों ने इस सुझाव को स्वीकार किया। यह भी फैसला लिया गया कि इस संघ का नाम हिमाचल प्रदेश रखा जाये। 8 मार्च 1948 को सभी पहाड़ी राजाओं ने संधि पर अपने हस्ताक्षर कर दिये और 15 अप्रैल 1948 को हिमाचल प्रदेश अस्तित्व में आया। 1950 ई0 में प्रदेश के पुर्नगठन के अन्तर्गत प्रदेश की सीमाओं का पुर्नगठन किया गया। कोटखाई को उप-तहसील का दर्जा खनेटी, बलसन, दरकोटी, कुमारसैन उप-तहसील के कुछ क्षेत्र कोटखाई में शामिल किए गए। कोटगढ़ को कुमारसैन उप-तहसील में मिलाया गया। हिमाचल प्रदेश को देवभूमि भी कहा जाता है इस क्षेत्र में आर्यो का प्रभाव ऋगवेद से भी पुराना है सन् 1950 में इसे केन्द्र शासित बनाया गया, परन्तु 1971 में इसे हिमाचल प्रदेश राज्य अधिनियम 1971 के अन्तर्गत 25 जनवरी 1971 को भारत का अठारहवां राज्य बनाया गया। ◆◆◆

तीन तलाक विधेयक

... -डा0 अर्चना गुलेरिया

सबल समाज, ऐसा जागरूक समाज जिसमें स्वाभिमान का भाव हो, अपने जीवन मूल्यों के प्रति आत्मविश्वास हो, अपनी परम्पराओं, आदर्शों व संस्कृति पर गर्व व सुसंगठित हो तो वह समाज सबल समाज कहलाता है। सबल समाज की अवधारणा को सशक्त करने के लिए नारी न्याय, गरिमा और उनके उत्थान के लिए दिनांक 1 अगस्त 2019 को महामहिम भारतीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी ने स्वयं के पारित तीन तलाक विधेयक को मंजूरी देकर नया कानून बनाकर महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम उठाया है। यह कानून बनने के बाद एक मध्यकालीन कुप्रथा को इतिहास के कूड़ेदान में फेंक दिया गया है। यह विधेयक लैंगिक समानता और महिलाओं के सम्मान का विधेयक है। तीन तलाक कहकर बेटियों को छोड़ दिया जाता था। आज पूरे विश्व भर में जब इस्लामिक देश अपने यहां अपनी महिलाओं को न्याय व उनके उत्थान के लिए सतत् प्रयासरत हैं, भारत तो एक लोकतांत्रिक एवं धर्म निरपेक्ष देश है, भारत को यह विधेयक उच्चतम न्यायालय द्वारा शाहबानो केस 1985 में समाप्त कर देना चाहिए था। माननीय उच्चतम न्यायलय ने तीन तलाक को अवैध बताया था लेकिन उस समय की केन्द्रीय सरकार ने फैसले को पलट दिया था।

सन् 1978 को इंदौर निवासी शाहबानो को उसके पति मोहम्मद खान ने तलाक दे दिया था, पांच बच्चों की मां 62 वर्षीय शाहबानो ने गुजारा भता पाने के लिए कानून की शरण ली। उच्चतम न्यायालय ने अपराध दण्ड सहिंता की धारा 125 के अंतर्गत गुजारा भता देने का आदेश दिया लेकिन सरकार ने उच्चतम न्यायालय के फैसले को पलट दिया था। आज़ाद भारत में ये लड़ाई मुस्लिम महिलाओं के हक के लिए थी जो

शाहबानो ने लड़ी थी। पहले 1985 और अब 2019, 34 वर्षों में दो मौके ऐसे आए, जब तीन तलाक का मुद्दा उच्चतम न्यायलय पहुंचा और कानून बना। 40 वर्षीय शायरा बानों की याचिका पर अगस्त 2017 में उच्चतम न्यायालय ने फैसला सुनाकर तीन तलाक को असंवैधानिक करार दिया था।

विधेयक का स्वरुप

यह मुस्लिम महिला विवाह से जुड़े अधिकारों का संरक्षण विधेयक है। कानून बन जाने के बाद यह 'तलाक-ए-बिद्दत' यानी एक ही बार में तीन बार तलाक कह देने के मामलो पर लागू होगा।

विधेयक का प्रभाव क्या होगा?

- तीन तलाक से जुड़े मामले नये कानून के दायरे में आयेंगे।
- पीड़िता का अपने और नाबालिग बच्चों के लिए गुजारा भता मांगने का हक मिलेगा।
- **तीन तलाक अब गैर कानूनी।** बिना वांरट गिरफ्तारी व दोषी को 3 साल की सजा का प्रावधान।
- मजिस्ट्रेट आरोपी को जमानत दे सकता है, लेकिन ऐसा तभी संभव है जब पीड़ित महिला का पक्ष सुन लिया जाए।
- मुकद्मे का फैसला होने तक बच्चा मां के संरक्षण में ही रहेगा।
- तीन तलाक का अपराध सिर्फ तभी संज्ञेय होगा जब पीड़ित पत्नी या उसके परिवार मायके या ससुराल के सदस्य एफ.आई. आर दर्ज कराएं।
- तीन तलाक विधेयक नारी सशक्तिकरण की दिशा में निम्न प्रकार से महत्वपूर्ण है।
- मुस्लिम पर्सनल लॉ में संसद के माध्यम से बदलाव किया गया है।
- विधेयक को समान नागरिक संहिता की शुरूआत माना जा सकता है।
- यह महिलाओं के सम्मान की दिशा में उठाया गया कदम है। इस से महिलाओं का उत्पीड़न रुकेगा। उन्हें इस कुप्रथा से आजादी मिलेगी आज एक तरफ भारतीय बेटियां फाईटर प्लेन, चन्द्रयान जैसे उपग्रह, अग्रणी व्यवसाई, उच्च कोटि की विदुषी व वीरागनाएं पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर राष्ट्र को अग्रणी राष्ट्रों की श्रेणी में ला खड़ा कर देने में सहायक हैं तो वहीं दूसरी तरफ कमजोर मानसिकता व कुप्रथाएं, हिन्दूस्तान की नारियों के लिए रोड़ा नहीं बन सकती। यही कर दिखाया है हमारे सशक्त राष्ट्र के सशक्त नेतृत्व ने। अत: सबल समाज की अवधारणा को मजबूत करने के लिए इस तरह के विधेयक मील के पत्थर साबित होंगे। ◆◆◆

... -डा0 जयकर्ण

एक महिला राजनीतिज्ञ और भारत की पूर्व विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज का जन्म 14 फरवरी 1952 को पिता श्री हरदेव शर्मा एवं माता श्रीमती लक्ष्मी देवी के घर अम्बाला छावनी में हुआ था। बचपन में ही इनके नाना-नानी ने इन्हें गोद ले लिया था। उन्होंने एस. डी. कॉलेज अम्बाला से बीए की पढाई पूर्ण की। 1970 में उन्हें अपने कॉलेज में सर्वश्रेष्ठ छात्रा के सम्मान से सम्मानित किया गया था। कॉलेज में वह तीन साल एनसीसी की सर्वश्रेष्ठ केडिट रही।

सुषमा शर्मा सेना में जाना चाहती थी। उस समय सेना में महिलाओं का प्रवेश नहीं था जिस कारण वह अपना सपना साकार नहीं कर सकी। यदि उन दिनों सेना में जाने पर महिलाओं का प्रवेश प्रतिबंधित न होता तो देश को महिला के रूप में एक बड़ा सैन्य अफसर मिलता। पंजाब विश्व विद्यालय चंडीगढ़ से कानून की पढ़ाई के समय ही उनकी मित्रता स्वराज कौशल से हुई। भारत की समावेशी राजनीतिक धारा जिसके अटल जी बहुत बड़े महारथी थे उसी गुरुकुल की सुषमा जी विदुषी छात्रा थी। 1970 में सुषमा स्वराज राजनीति में शामिल हुई। आपात काल के समय उन्होंने जयप्रकाश नारयण के सम्पूर्ण क्रान्तिकारी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उसके बाद उन्होंने 'जनसंघ' को ज्वाइन किया।

25वर्ष की उम्र में सुषमा स्वराज ने देवीलाल सरकार में श्रम एवं रोजगार विभाग के कैबनिट मंत्री के रूप में शपथ ली। 27 वर्ष की आयु में सुषमा स्वराज हरियाणा बीजेपी की अध्यक्ष बनी। अप्रैल 1990 में सुषमा स्वराज राज्य सभा की सदस्य चुनी गयी। सन् 1996 में अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में कैबिनेट मंत्री बनी। सन 1998 में उन्हें फिर से राज्य सभा के लिए चुन लिया गया। इस बार उन्हें दूर संचार मंत्रालय के अतिरिक्त सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का कार्यभार सौंपने के लिए शपथ दिलाई गयी। इस कार्यकाल में उन्होंने एक उल्लेखनीय कार्य फिल्म निर्माण को एक उद्योग के रूप में घोषित करना था। उन्होंने विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों में सामुदायिक रेडियो शुरू किये। अक्तूबर1998 में उन्हें राजधानी दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ। सितंबर 1999 में उन्होंने एक बार फिर लोकसभा में कर्नाटक के बेल्लारी निर्वाचन क्षेत्र से टिकट मिला। लेकिन वह सोनिया गाँधी से यह चुनाव हार गयी।

2003 में अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में उन्हें दोबारा सूचना एवं प्रसारण मंत्री चुना गया। वर्ष 2014 के लोकसभा आम चुनाव में उन्होंने मध्यप्रदेश के विदिशा निर्वाचन क्षेत्र से लगभग चार लाख से अधिक मतों से जीत हासिल की। 26मई 2014 से मई 2019 तक सुषमा स्वराज मोदी सरकार में भारत की विदेश मंत्री रहीं। सुषमा स्वराज भारतीय राजनीति का प्रतिनिधि चेहरा थी। वे अनेक भाषाओं में पारंगत थीं। हिंदी, अंग्रेजी,धारा प्रवाह संस्कृत,हरयाणवी धड़ाधड़, पंजाबी इतनी प्यारी, उर्दू भी इतनी अच्छी। जब कर्नाटक से चुनाव लड़ी तो कन्नड़ भी सीख ली। जिम्मेदार पदों पर रहते हुए उन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय,अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास किया जैसे:-तेलंगाना राज्य बनाने में अहम भूमिका। डोकलाम विवाद सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका। संसद का प्रसारण शुरू करवाने में योगदान करना। सर्जिकल स्ट्राईक के बाद कूटनीतिक मोर्चा संभालना। बॉलीवुड को इंडस्ट्री घोषित करना। विदेशों में फंसे पांच हज़ार भारतीयों को सुरक्षित निकालना। सूडान में फंसे एक सौ पचास भारतीयों को सुरक्षित पहुँचाना। लीबिया में फंसे एक सौ पचास भारतीयों को बचाना। दिव्यांग गीता को पाकिस्तान से वापिस भारत लाकर उसके अभिभावकों से मिलाने का भरपूर प्रयास करना।

2014 के लिए राष्ट्रपति ने इन्हें उत्कृष्ट सांसद सम्मान से अलंकृत किया था। जिसके बाद उन्होंने कहा था, 'यह सौभाग्य की बात है कि उन्हें यह पुरस्कार देश की पहली महिला राष्ट्रपति के हाथों मिला।' उन्होंने कहा, 'मेरा कद तो छोटा था। सहयोगियों ने यह पुरस्कार देकर मेरे कद को और भी बड़ा कर दिया है।' 6 अगस्त 2019 को मृत्यु से तीन घंटे पहले उन्होंने कश्मीर पर मोदी सरकार के फैसले की सरहाना की थी। उन्होंने प्रधानमंत्री को धन्यवाद ट्वीट किया था , 'मैं अपने जीवन में इस दिन को देखने की प्रतीक्षा कर रही थी।' ◆◆◆

> *यह क्या राजन, तुम्हारे गोदाम में तो तरह-तरह के अनाज रखे हैं। तुम इन सबकी जगह कोई एक अनाज ही क्यों नहीं रखते? राजा को यह सुन थोड़ा अचरज हुआ और वह बोला, यह कैसे संभव है। अगर मैं गेहूं, चावल, दाल, इत्यादि की जगह बस एक अनाज ही रखूंगा, तो हम अलग-अलग स्वाद और पोषण के भोजन कैसे कर पाएंगे....*

चंदनपुर का राजा बड़ा दानी और प्रतापी था। उसके राज्य में सब खुशहाल थे, पर राजा एक बात को लेकर बहुत चिंतित रहा करता था कि धर्म व दर्शन पर लोगों के विचारों में सहमति क्यों नहीं बनती। एक बार राजा ने विभिन्न धर्मो के उपदेशकों को आमंत्रित किया और एक विशाल कक्ष में सभी का एक साथ रहने का प्रबंध करते हुए कहा, अब अगले कुछ दिनों तक आप सब एक साथ रहेंगे और आपस में विभिन्न धर्मों और दर्शनों पर विचार-विमर्श करेगें। और जब आप सभी के विचार एकमत हो जाएंगे तो मैं आपको ढेरों उपहार देकर यहां से विदा करूंगा। और ऐसा कहते हुए राजा वहां से चला गया। कक्ष में घोर विचार-विमर्श हुआ। सभी अपनी-अपनी बात समझाने में लगे रहे, पर कुछ दिन बीत जाने पर भी वे एक मत नहीं हो पाए। पड़ोसी राज्य में रहने वाले एक महात्मा जी को जब यह बात पता चली तो वह राजा से मिलने पहुंचा।

हे राजन! मैंने सुना है कि तू बड़ा दानी है, क्या तू मुझे भी दान देगा? महात्मा जी बोले। अवश्य ! बताइए आपको क्या चाहिए। राजा बोला। महात्मा जी-मुझे तेरे अनाज के गोदाम से कुछ अनाज चाहिए। राजा-जी बिल्कुल, आप मेरे साथ आइए। और राजा उन्हें गोदाम तक ले गया। वहां पहुंचते ही महात्मा जी बोले, अरे! यह क्या राजन, तुम्हारे गोदाम में तो तरह-तरह के अनाज रखे हैं। तुम इन सबकी जगह कोई एक अनाज ही क्यों नहीं रखते? राजा को यह सुन थोड़ा अचरज हुआ और वह बोला, यह कैसे संभव है।

अगर मैं गेहूं, चावल, दाल, इत्यादि की जगह बस एक अनाज ही रखूंगा, तो हम अलग-अलग स्वाद और पोषण के भोजन कैसे कर पाएंगे और जब प्रकृति ने हमे इतने ढेर सारे अन्न दिए हैं तो बस किसी एक अन्न का ही प्रयोग करना कहां की बुद्धिमानी है? बिल्कुल सही राजन, जब तुम विभिन्न अनाजों की उपयोगिता एक से नहीं बदल सकते, तो भला विभिन्न धर्मों के विचारों और दर्शनों को एक कैसे कर सकते हो? सबकी अलग-अलग उपयोगिता है और वे समय-समय पर मनुष्य का मार्गदर्शन करते हैं। महात्मा जी ने अपनी बात पूरी की। राजा को अपनी गलती का अहसास हो चुका था और उसने कक्ष में बंद सभी उपदेशकों से क्षमा मांगते हुए उन्हें विदा कर दिया। ◆◆◆

आरोग्य भारती द्वारा औषधीय पौधारोपण

पौधारोपण का शुभारम्भ आरोग्य भारती के राष्ट्रीय सचिव डा. राकेश पण्डित द्वारा किया गया। कार्यक्रम मे कल्याणी गौशाला के अध्यक्ष रोहिताश चन्द्र ,आरोग्य भारती के जिलाध्यक्ष डॉ. अनिल मेहता के साथ आयूष विभाग के डाक्टरों , शिमला नगर के व्यापरी, रामकमल ट्रस्ट के सदस्यो महिलाओं और सरकारी औषधीय पौधो मे सहजन के 100 पौधों के अतिरिक्त बहेड़ा दाड़ू एवं पीपल के साथ 150 पौधों का रोपण किया। आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हि प्र विश्वविद्यालय से वनस्पति विज्ञान के विशेषज्ञ डॉ. अनिल ठाकुर रहे, जिन्होंने औषधीय वनस्पति के विशेषज्ञ डॉ. राकेश के साथ अनेक औषधीय पौधों की जानकारी कार्यक्रम मे भाग लेने वालो को दी। ◆◆◆

कम लागत प्राकृतिक खेती

-डॉ. राजेश्वर चंदेल

हिमाचल प्रदेश की आबादी का लगभग 90 प्रतिशत भाग गांव में निवास करता है। प्रदेश में 17,882 गांव हैं जिसमें 9.61 लाख किसान परिवार रहते हैं। प्रदेश के कुल 35,59,422 कर्मियों में 58 प्रतिशत किसान-बागवान हैं जिनकीआजीविका का प्रमुख हिस्सा खेती-बागवानी पर ही निर्भर है। प्रदेश की अधिकतर आबादी ग्रामीण होने के बावजूद खेती की घरेलू सकल उत्पाद में हिस्सेदारी पिछले 5 वर्ष में 14 प्रतिशत से घटकर 9. 40 प्रतिशत रह गई है। आज प्रदेश की मात्र 30 प्रतिशत आबादी ही कृषि पर पूरी तरह निर्भर रह गई है। एक अपुष्ट आंकड़े के अनुसार लगभग 18-20 प्रतिशत किसान हर वर्ष खेती छोड़ रहे हैं। प्रसिद्ध कृषि दार्शनिक घाघ के अभिमत '***उत्तम खेती मध्यम बान, निकृष्ट चाकरी, भीख निदान***' के अनुसार प्राचीनकाल से खेती ही सर्वश्रेष्ठ व्यवसाय रहा है। आज यह कहावत उल्टी सी हो गई है। वर्तमान खेती की बढ़ती लागत तथा रसायनों के अत्यधिक प्रयोग ने किसान - बागवान को बहुत बड़ी दुविधा में डाल दिया है। इस स्थिति ने किसान को असहज, ऋणी तथा लाचार बना दिया है। वह भूल सा गया है कि उनके पुरखे गोबर और गोमूत्र से खाद बना कर इतने सम्पन्न थे कि उन्होंने 1857, 1905 और 1930 के स्वतंत्रता आंदोलनों में सबसे अधिक भाग ही नहीं लिया बल्कि उसमें दिल खोलकर धन भी खर्च किया। अर्थात् उस समय के किसान समृद्ध एवं संम्पन्न थे। खेती एवं किसान की आज की इस दयनीय स्थिति में महाराष्ट्र के एक कृषि वैज्ञानिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता पदम्श्री सुभाष पालेकर ने अपने तप एवं वैज्ञानिक अनुसंधान से रसायन रहित एवं कम खर्चीली खेती विधि विकसित कर किसान-बागवान को कृषि दार्शनिक घाघ की कहावत को याद दिलाने का कार्य किया है। पालेकर ने विभिन्न रासायनिक खादों और कीटनाशकों को छोड़कर भारतीय नस्ल की गाय के गोबर एवं मूत्र से खेती में प्रयुक्त होने वाले आदानों को मुफत एवं बहुत ही थोड़े परिश्रम के साथ बना कर और खेतों में सफलता पूर्वक प्रयोग कर'उत्तम खेती' की उस लोकोक्ति को फिर से चरितार्थ करने का प्रयास किया है। पालेकर द्वारा विकसित इस पद्धति का नाम है 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' जिसे 'न्यूनतम लागत प्राकृतिक खेती' के नाम से भी देश भर में पहचान मिली है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती-संकल्पना

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता, स्वस्थ पर्यावरण, जहर-रोग-कीट-प्राकृतिक संकट-कृषि कर्ज एवं चिंता मुक्त के साथ-साथ किसान-बागवान को समृद्ध, खुशहाल एवं स्वावलम्बी बनाने वाली खेती ही -सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती है।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 चक्र

1. जीवामृत: किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसे: गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या सजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल, भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोतरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव-जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्व श्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करताहै। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में 'जैविक कार्बन' की मात्रा में बढ़ोत्तरी होती है।

2. बीजामृत: देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौधा-जड़ों पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।

3. आच्छादन: भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतु इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढक दिया जाता है। इस प्रक्रिया से 'ह्यूमस' की वृद्धि,भूमि की ऊपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।

4.वापसी: (भूमि में वायु प्रवाह) यह वापसी, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर त्वरित गति से 'ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंधन की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न ता`अधिक वर्षा-तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है। ◆◆◆

जीडीपी में महिलाओं के योगदान के उचित मूल्यांकन की आवश्यकता

- निर्मला सीतारमण

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि सकल घरेलू उत्पाद में महिलाओं के योगदान का उचित मूल्यांकन नहीं हो पाता। इस दिशा में काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने विश्व के सबसे बड़े महिला संगठन राष्ट्र सेविका समिति और अन्य महिला संगठनों का आह्वान किया कि वो इस विषय में विचार करें और महिलाओं के योगदान को बेहतर तरीके से परिलक्षित करने के लिए किसी फार्मूले की तलाश करें। निर्मला सीतारमण 'बजट 2019-2020 महिलाओं के सरोकार' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार रख रहीं थीं। सीतारमण के भाषण और परिचर्चा के इस कार्यक्रम का आयोजन मेधाविनी सिंधु सृजन ने किया जो राष्ट्र सेविका समिति, दिल्ली प्रांत का प्रबुद्ध वर्ग है।

बजट 2019-20 पर चर्चा करते हुए निर्मला सीतारमण ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने निर्देश दिया था कि बजट ऐसा होना चाहिए जिसमें सबके लिए कुछ न कुछ हो और जिससे आमजन सहजता से जुड़ सकें। उन्होंने कहा कि इस बार के बजट का मुख्य लक्ष्य था आमजन के रहन-सहन में सहजता यानि ईज ऑफ लिविंग। उन्होंने बजट में महिला संबंधी योजनाओं पर चर्चा करते हुए कहा कि इस बजट में सभी वर्गों की महिलाओं के लिए कुछ न कुछ था। उन्होंने मुद्रा योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि इस योजना से बड़ी संख्या में महिलाएं जुड़ीं हालांकि ये सभी के लिए थी। इसमें महिलाओं के जुड़ने की खास वजह ये थी कि इसके लिए किसी सिक्योरिटी की आवश्यकता नहीं थी और न ही इसके लिए उन्हें घर के किसी पुरूष सदस्य की आवश्यकता थी।

निर्मला सीतारमण ने कहा कि वो देश के उद्यमियों और वेल्थ क्रिएटर्स का सम्मान करती हैं क्योंकि वो संपदा बढ़ाने के साथ ही लोगों को रोजगार भी देते हैं। वो इस दिशा में अनथक काम कर रहीं हैं, पिरकि कर विभाग फेसीलिटेटर बनें न कि प्रशासक। उन्होंने बताया कि वो इसके लिए दूसरी श्रेणी के शहरों में कर विभागों के साथ लगातार चर्चा कर रहीं हैं। अहमदाबाद के बाद वो वाराणसी और मैसूर आदि में भी कर विभाग के कर्मचारियों के साथ चर्चा करेंगी।

इस अवसर पर सुनीला सोवानी, अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख, राष्ट्र सेविका समिति ने कहा कि महिलाओं और वृद्धों की सुरक्षा का जो काम पहले परिवार करता था, धीरे-धीरे अब वो भी सरकार का दायित्व बनता जा रहा है, जबकि उसके पास इतने संसाधन नहीं हैं। उन्होंने कहा कि सरकार जो योजना महिलाओं के लिए बनाती है, वो अतंतः पूरे परिवार के काम आती है, इसलिए आर्थिक और वित्तीय क्षेत्र में भी समग्रता से चिंतन होना चाहिए। आवश्यकता ये भी है कि आज कॉर्पोरेट जगत महिलाओं को सिर्फ स्त्री-पुरूष समानता की दृष्टि से ही न देखे, उसे परिवार की धुरी के तौर पर संवेदनशील तरीके से देखे।

इस अवसर पर बिंदु डालमिया, अध्यक्ष, राष्ट्रीय वित्त समावेशन समिति, नीति आयोग ने बजट में महिलाओं की भागीदारी बेहतर करने के लिए सुझाव रखे। कॉर्पोरेट प्राफेशनल प्रीति श्रीवास्तव ने कहा कि सरकारी योजनाओं के बारे में दूर-दराज के इलाकों की महिलाओं में जागरूकता फैलाने की बहुत आवश्यकता है ताकि गरीब महिलाएं भी इनका पूरा लाभ उठा सकें। शिक्षाविद् प्रीति गोयल ने कहा कि कर व्यवस्था को और सरल बनाने की आवश्यकता है और कर जमा करवाने वालों के लिए भी कुछ प्रोत्साहन होना चाहिए। वर्ष 1953 में समिति ने सेविका प्रकाशन आरंभ किया जो विभिन्न भाषाओं में सामाजिक-राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशित करता है। वर्ष 1965 से प्रतिवर्ष नववर्ष प्रतिपदा पर दिनदर्शिका का प्रकाशन होता है।

चाहे प्राकृतिक आपदा हो या देश पर हमला, समिति सदा ही सेवा, बचाव और सहायता कार्य में आगे रही है। मेधाविनी सिंधु सृजन समिति की प्रबुद्ध महिलाओं का समूह है जिसमें जानी-मानी वकील, कलाकार, लेखक, पत्रकार आदि शामिल हैं। ये समय-समय पर राष्ट्रहित के विषयों पर सेमीनार और संगोष्ठी आदि आयोजित करता है और सेविकाओं को ज्वलंत विषयों की जानकारी और विश्लेषण उपलब्ध करवाता है। ◆◆◆

कश्मीर का पुनर्जन्म

कश्मीर, देश का मुकुट मणि
भारत की धरा का स्वर्ग धाम
जहां कल-कल बहती झेलम संग
डल में हाउसबोट की खुली शाम।
अलगाववाद का ज़ोर जहां की
हवा में कभी समाया था,
आतंक के अस्तित्व का साया
जिस पर कभी मंडराया था(
आज तिलिस्म वो टूट गया
जब तीर कमान से छूट गया
और लगा भी सही निशाने पर
आतंक रूपी उसी बहाने पर,
ले आड़ जिसकी चल रहा था
अलगाववाद का ज़ोर,
हाशिए पर दिया धकेल
आतंक रूपी चोर।
एक विधान, एक निशान
बुलंद हुआ यह नारा,
पुनर्गठित हुए कश्मीर में
पुनः लहराएगा तिरंगा हमारा।
श्यामा के बलिदान का
आज हो रहा आभास है।
नृपेंद्र की इच्छा ने बदला
देश का इतिहास है।
शहीदों की शहादत, देश का कर्म
अद्भुत, अद्वितीय, ऐतिहासिक निर्णय
धरती के स्वर्ग का पुनर्जन्म।

-वरुण शर्मा

देशद्रोही फन कुचलना होगा

जब हम पैदा हुए तो देश आजाद था,
आधा कश्मीर पाकिस्तान के कब्जे में
था, बाकी में धारा 370 थी।
होश संभाला तो पता चला कि,
कश्मीर का कुछ हिस्सा चीन ले गया,
लगा यह देश नहीं कोई रोटी का टुकडा है,
जिसे चील और कौवे,
नोच नोच कर खा रहे हैं।
1965 और 1971 में जो जीता,
वह भी सब खो दिया
चाय की एक प्याली में,
सारी जिंदगी यूं ही दबाव में
यूं ही जीते रहे,
देशद्राही जब जो मन में आता रहा,
कहते रहे,
सोचता था कि न जाने क्या होगा
मेरे देश का,
15 अगस्त की इंतजार कर रहा था,
उस दिन तो कुछ देशभक्ति जगेगी,
कुछ देशभक्ति के गीत सुनाई देंगे,
मन को कुछ राहत महसूस होगी,
लेकिन यह क्या 15 से पहले
5 अगस्त आ गया,
दु:ख में डूब गए भारत के सारे राष्ट्रद्रोही,
दो गज लंबी और कैंची से भी तेज
चलती जुबान को,
लकवा मार गया।
पहली बार लगा कि हमारा
भी कोई अस्तित्व है।
दुनिया हैरान और परेशान है,
यह क्या हो गया
कैसे हो गया
सारा भारतवर्ष भी खुश है,
लेकिन यह याद रखना,
ये राष्ट्रद्रोही एक बार फिर फन उठाएंगे,
भारत की अस्मिता को ललकारेंगे,
इनको एक बार फिर,
कुचलना होगा,
एक बार फिर कुचलना होगा।

राजेश कुमार बंसल, शिमला

आरोप

आज आरोपों के वातावरण में
विचरते हैं
अनशन, कड़वे शब्द
इस बाजार में
चलते हैं
छल प्रपंच के
सिक्के।
एक ऐसा
पहाड़ है यह
जिसमें
उंचाई पकड़ते हैं
दुस्साहस
आरोपों के पेड़ों से
टपकते हैं,
भद्दी गालियों के फल।
इस रास्ते में
पड़ते हैं घृणा, ईर्ष्या
और इन्तकाम के पड़ाव
कैसे चलेगा भारत
प्रगति के पथ पर।

केवल सिंह भारती, सदर बाजार, डल्हौजी।

युवा वर्ग का सामाजिक दायित्व

-डा0 सुनीता धीमान

मनुष्य के जीवन की प्रमुख अवस्था यौवन होती है। जिसमें वह सपने देखता है तथा उन सपनों को पूर्ण करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहता है इस प्रकार वह अपने व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ देश को भी विकास के पथ पर अग्रसर करता है। देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक जिम्मेदारियां युवाओं के कंधों पर होती हैं। युवा देश का वर्तमान है तथा वही अतीत और भविष्य के लिए एक सेतु का कार्य करता है। इस प्रकार वह समाज और देश का प्रमुख स्तम्भ है, वह समाज और देश के विकास में पूर्णतः उतरदायी होता है मनोज कुमार जी कहते हैं-

''युवाशक्ति ही राष्ट्रशक्ति है,
जन सेवा ही देश भक्ति है।
उठो जवान बढ़ो जवान,
देश धर्म फैलाकर देखो,
दृढ़ संकल्प जग कर देखो।
संभव सब कुछ हो सकता है,
तन मन धन तो लगाकर देखो।
कर्मशीलता सुलभ युक्ति है,
युवाशक्ति ही राष्ट्रशक्ति है।'

भारत की जनसंख्या का लगभग 65 प्रतिशत हिस्सा युवाओं का है यही युवा भारतवर्ष के मानव बल हैं। युवाओं में असंभव के पार देखने की अद्‌भुत क्षमता होती है उनके अन्दर के जोश और असम्भव को संभव करने की क्षमता के कारण ही समाज सदैव युवा शक्ति से विशेष टकटकी लगाए रहता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कहते हैं- 'हमारे देश की युवा शक्ति बौद्धिक सम्पदा हुनर कौशल की क्षमता और विकास के लिए कुशल मानव बल की मांग ये सब हैं लेकिन उसे एक कड़ी में पिरोकर प्रगति में भागीदार बनाने को लेकर उदासीनता व्याप्त है। विश्व में भारत सबसे युवा देश है जहां 75 फीसदी युवा 35 वर्ष से कम आयु के हैं। यदि इस युवा शक्ति को राष्ट्र सम्पति के तौर पर राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनाने की दिशा आजादी के बाद के शासकों ने अपनाई होती तो हिन्दूस्तान दुनिया का शक्तिशाली राष्ट्र बन गया होता।'

युवा वर्ग के अन्दर ही भारत देश को विकसित देशों की श्रेणी में लाने की क्षमता है। इतिहास गवाह है सदैव युवा वर्ग ने मानवीय मूल्यों को अपनाने का प्रयास किया है। अन्याय, शोषण और उत्पीड़न के खण्डहरों पर युवा हाथों से ही आजादी का गौरव हमने पाया है यहां विकेकानन्द जी की पंक्तियां सही लगती हैं-उन्होंने युवाओं से कहा था 'उठो जागो और तब तक न रुको जब तक अपने लक्ष्य तक न पहुंचो।' जवानी ही मनुष्य की आयु का चरम क्षण होती है। यदि सच कहूं तो जवानी की उमंगे सागर को मात करती हैं तथा आकाश को भी छोटा साबित कर देती हैं, युवा वर्ग जिस भी कार्य का बीड़ा उठाता है वह उसे परिणाम तक पहुंचाना जानता है। तकनीक के युग में माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, एप्पल, फेसबुक, ट्विटर, याहू, अमेजन, फ्लिपकार्ट, स्नैपडील, विप्रो जैसी कई बड़ी-बड़ी कम्पनियों का दायित्व युवा वर्ग के कंधों पर है। लेकिन आज का युवा वर्ग संक्रमण काल से गुजर रहा है। वह अपने सामर्थ्य अनुसार बहुत कुछ करना चाहता है, लेकिन परिस्थितियां उसका साथ नहीं देती। समाज में हर जगह प्रतिस्पर्धा और भ्रष्टाचार के कारण अपने सपनों को साकार नहीं कर पाता। समस्त युवा वर्ग को संकल्प लेना होगा कि समाज और राष्ट्र की चुनौतियों का सामना करे तथा भारतीय संस्कृति का निर्वाह करते हुए समाज की ज्वलंत समस्याओं पर गहन चिन्तन और उचित निर्णय लेकर समाज और देश को प्रगति की राह पर अग्रसर करे। सर जेम्स के अनुसार:- 'युवा ऐसा पक्षी है जो टूटे हुए अण्डे और बेबसी से स्वतंत्रता और आशा के खुले आसमान में पंख फैला रहा है, क्योंकि युवा खोज और सपनों के द्वारा अपने देश को समृद्धि प्रदान कर सकता है।' ◆◆◆

चिदंबरम केसः पी चिदंबरम के खिलाफ आरोप

...-डा0 सुनीता धीमान

पी. चिदंबरम ने भारतीय दंड संहिता की धारा 420 और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 8 और 13 के साथ पढ़ने वाली धारा 120 बी के तहत अपराधों के लिए अग्रिम जमानत मांगी। पी. चिदंबरम के खिलाफ व्यापक आरोप आईएनएक्स मीडिया द्वारा प्रस्तावित टीवी चैनल में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को मंजूरी देने के लिए कार्ति द्वारा नियंत्रित कंपनियों और कंपनियों के माध्यम से उनके बेटे कार्ति चिदंबरम द्वारा प्राप्त किकबैक से संबंधित हैं। सीबीआई द्वारा की गई जांच के दौरान दर्ज किए गए बयानों से पता चला है कि कार्ति चिदंबरम द्वारा नियंत्रित कंपनियां किसी भी वास्तविक व्यावसायिक गतिविधियों को अंजाम नहीं दे रही थीं। जांच से पता चला कि इन कंपनियों द्वारा किए गए कई लेन-देन वास्तविक नहीं थे और कंपनी द्वारा उत्पन्न राजस्व नकली लेन-देन और नकली चालान बढ़ाने के माध्यम से किया गया था।

कार्ति चिदंबरम द्वारा नियंत्रित कंपनियों को प्राप्त धन वास्तव में एक प्रस्तावित टीवी चौनल में निवेश के लिए प्छग मीडिया को एफडीआई स्वीकृति देने के लिए, वित्त मंत्री के रूप में ,पी चिदंबरम द्वारा INX मीडिया को दी गई मंजूरी के लिए प्राप्त अवैध संतुष्टि था। कार्ति चिदंबरम द्वारा नियंत्रित फर्मों द्वारा प्राप्त अवैध धन का उपयोग बाद में अन्य कंपनियों में निवेश करने और संपत्ति खरीदने के लिए किया गया था। सरल शब्दों में, अवैध स्रोतों से प्राप्त धन का उपयोग निवेश को वैध बनाने के लिए किया गया था। यह मनी लॉन्ड्रिंग और काले धन को सफेद धन में परिवर्तित करने का एक स्पष्ट मामला था। चूंकि, इस मामले में करोड़ों का अवैध धन शामिल है, इसलिए अग्रिम जमानत देना ईडी और सीबीआई द्वारा की जा सकने वाली जांच के लिए अत्यधिक पूर्वाग्रह पूर्ण हो सकता है। पी चिदंबरम का हिरासत में पूछताछ बड़ी साजिश का पता लगाने में मदद करेगा।

जहाँ तक सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष होने वाली घटनाओं का विषय है , जो भी हुआ वह सर्वोच्च न्यायालय के नियमों, 2013 के अनुसार था। सर्वोच्च न्यायालय के नियमों के अनुसार जब कोई नया मामला या केस उसके समक्ष आता है, तो उसकी सुनवाई के लिए उसे लिस्ट होना पड़ता है। अगर कोई मुवक्किल अपना कोई ऐसा मामला लिस्ट करना चाहता हैं जो अभी तक कभी भी सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष लिस्ट नहीं हुआ है (जहां न्यायालय ने दूसरी पार्टी को नोटिस जारी नहीं किया है), तो उसको उस मामले का उल्लेख केवल मुख्य न्यायाधीश की पीठ के सामने ही करना होता है। मामले को सूचीबद्ध कराने के लिए वह मुख्या न्यायाधीश की पीठ के अलावा किसी अन्य पीठ के सामने उल्लेख कर के सूचीबद्ध नहीं करा सकता। पी चिदंबरम के लिए यह उम्मीद करना अनुचित था कि उनके मामले को विशेष रूप से सूचीबद्ध किया जाना चाहिए, जब इसे उसी दिन दायर किया गया था और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दैनिक कार्यसूची में प्रकाशित नहीं किया गया था। न्यायमूर्ति राममाना की पीठ इस मामले को सूचीबद्ध नहीं कर सकती थी क्यूंकि सर्वोच्च न्यायालय के नियमों के अनुसार भारत के मुख्य न्यायाधीश के सामने ही ताजा मामले का उल्लेख किया जा सकता है । कानून सभी के लिए समान रूप से लागू होता है। पी चिदंबरम के लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं किया जा सकता।◆◆◆

20 सितंबर को होगा सीयू का पांचवां दीक्षांत समारोह

केंद्रीय विवि प्रशासन ने समारोह को लेकर शुरु कीं तैयारियां

हरीश चंद्र

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय का पांचवां दीक्षांत समारोह 20 सितंबर को होगा। केंद्रीय विवि प्रशासन ने समारोह के आयोजन को लेकर तैयारियां शुरू कर दी हैं। हालांकि, अभी दीक्षांत समारोह में मुख्यातिथि का नाम फाइनल नहीं हुआ है।

मुख्यातिथि तय नहीं, तैयार की जा रही मेधावियों की सूची

सीयू प्रशासन वर्ष 2017-18 में दीक्षांत समारोह सितंबर में करने जा रहा है। सभी विषयों के मेधावी विद्यार्थियों और शोधार्थियों की सूची तैयार की जा रही है। धर्मशाला कॉलेज के त्रिगर्त सभागार में केंद्रीय विवि दीक्षांत समारोह करवाने की योजना बना रहा है। उधर, सीयू के कुलपति डॉ. कुलदीप चंद्र अग्निहोत्री ने कहा कि पांचवें दीक्षांत समारोह 20 सितंबर को रखा गया है। इसके लिए तैयारियां शुरू कर दी हैं।

हिमाचली परिधान में डिग्री ले सकते हैं मेधावी

दीक्षांत समारोह में डिग्री लेने वाले छात्रों के लिए हिमाचली परिधान को लेकर योजना बनाई जा रही है। अभी तक पूर्व में हुए चार दीक्षांत समारोह में गाउन पहनकर ही मेधावियों ने डिग्रियां प्राप्त की हैं।

पहले दीक्षांत समारोह में आए थे दलाईलामा

केंद्रीय विवि का पहला दीक्षांत समारोह फरवरी 2013 में हुआ था। इसमें धर्मगुरु दलाईलामा मुख्यातिथि थे। इसके अलावा फरवरी 2014 में आयोजित हुए दूसरे दीक्षांत समारोह में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने शिरकत की थी। फरवरी 2016 के तीसरे दीक्षांत समारोह में तत्कालीन मानव संसाधन मंत्री स्मृति ईरानी और मई 2017 में चौथे दीक्षांत समारोह में कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अशोक सरियाल मुख्यातिथि रहे हैं।

सूचना

इस वर्ष मातृवन्दना संस्थान द्वारा, मातृवन्दना पत्रिका में स्तरीय लेख लिखने वाले लेखकों को पुरस्कृत करने की योजना बनी है। सम्बन्धित लेखकों को पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा।

Dr. Hem Raj Sharma
Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

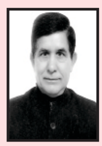

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi
"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"
JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre
Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

धारा 370 का हटना

भारतीय संविधान की जीत है

भारतीय संविधान के अस्थायी प्रावधान अनुच्छेद 370 को समाप्त करने और जम्मू कश्मीर राज्य के पुनर्गठन पर पू. सरसंघचालक और माननीय सरकार्यवाह जी ने अपने संयुक्त वक्तव्य में कहा कि जम्मू कश्मीर के सभी निवासियों के लिए यह हर्ष का विषय है कि इस निर्णय से देश के अन्य राज्यों की तरह भारतीय संविधान के अन्तर्गत सुशासन एवं समग्र विकास का अवसर उन्हें भी प्राप्त होगा। शेष भारत की जनता जम्मू कश्मीर के समाज के विकास एवं कल्याण के कार्य में पूर्ण रूप से सम्मिलित होगी, यह हमें विश्वास है। सभी देशवासियों को अपने संकीर्ण स्वार्थो एवं राजनैतिक मतभेदों से ऊपर उठकर संविधान की सर्वोच्चता व उसकी मूल भावना को स्थापित करने वाले, तथा राष्ट्रीय एकात्मता-अखंडता को पुष्ट करने वाली इस पहल का अभिनंदन करना चाहिए।

इस हेतु बलिदानों और संघर्षों को याद करते हुए उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 के दुरुपयोग से उत्पन्न संवैधानिक विसंगतियों को दूर करने के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. प्रेमनाथ डोगरा जी के नेतृत्व में प्रजा परिषद का ऐतिहासिक आंदोलन, जम्मू कश्मीर सहित भारत के देशभक्तों ने सतत संघर्ष किया, बलिदान दिया यातनाएं सही, उन सभी का हम कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करते हैं।

पू. सरसंघचालक और माननीय सरकार्यवाह का पूरा वक्तव्यः-

निश्चित रूप से 5 अगस्त और 6 अगस्त का दिन हम सब भारतीयों के लिए ऐतिहासिक दिन है, जबकि भारतीय संसद ने जम्मू और कश्मीर से जुड़े अति महत्वपूर्ण और दूरगामी निर्णय लिए। संसद में हुए इन निर्णयों के महत्वपूर्ण अंश निम्नलिखित हैं:

1- जम्मू कश्मीर राज्य का संविधान समाप्त हो गया है।

2- जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 35-ए की समाप्ति के बाद राज्य के दलितों, वेस्ट पाकिस्तानी शरणार्थियों, गोरखाओं और महिलाओं को सारे बराबरी के अधिकार मिलेंगे।

3- जम्मू कश्मीर में राज्य का अब कोई ध्वज नहीं होगा। दोनों ही केंद्र शासित प्रदेशों में सिर्फ भारत का झंडा लहराएगा।

4- जम्मू कश्मीर रीआर्गेनाइजेशन एक्ट से जम्मू कश्मीर को दो केंद्र शासित प्रदेशों में बाँट दिया गया है। क- जम्मू और कश्मीर, ख- लद्दाख। जम्मू कश्मीर में विधानसभा होगी, इसकी कितनी सीटें होंगी, हरेक सीट का कितना क्षेत्रफल होगा, ये नए सिरे से तय होगा। यानि कि अब राज्य का परिसीमन किया जायेगा। इसी के साथ जम्मू और कश्मीर में भेदभाव पूर्ण सीटों के बंटवारे के विवाद का भी अंत हो जाएगा।

5- अनुच्छेद 370 से जुड़ा एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि 370 के प्रश्न पर न बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर सहमत थे न ही सरदार वल्लभ भाई पटेल। इसके साथ-साथ संविधान सभा के अधिकांश लोग भी 370 से असहमत थे।

यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि इसके पक्ष में अनेक ऐसे दल भी आए जो रा.ज.ग. का हिस्सा नहीं हैं। बीजद, बसपा, वाईएसआर, अन्नाद्रमुक ऐसे दल हैं- जबकि जनता दल यू ने इसका विरोध तो किया लेकिन रा.कां पार्टी की तरह मतदान में भाग नहीं लिया। तृणमूल कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और राजद भी विरोध में रहे। पर कांग्रेस के लिए चिन्ता का विषय है कि महासचिव ज्योतिरादित्य, पूर्व महासचिव जनार्दन द्विवेदी, दीपेन्द्र हुड्डा, मिलिन्द देवड़ा आदि ने पार्टी लाइन से हटकर विधेयक का समर्थन किया। राज्यसभा में कांग्रेस के मुख्य सचेतक श्री भुवनेश्वर कलिता ने तो यह कहते हुए राज्यसभा से ही त्यागपत्र दे दिया कि वे इस पाप में भागीदार नहीं होंगे। अनिल शास्त्री ने कहा मंडल का विरोध करके हमने बिहार और उ. प्र. गवाया इसका विरोध करके हम सारे देश से खारिज हो जाएंगे। ◆◆◆

17 वीं लोकसभा का मानसून सत्र देश के संसदीय इतिहास में अति महत्वपूर्ण रहा। इस सत्र में काम भी अधिक हुआ और इसकी अवधि बढ़ाई गई। 37 सत्रों में कुल मिलाकर 35 विधेयक पारित हुए। अनेक विधेयक अति महत्वपूर्ण और समाज तथा देश को दूर तक प्रभावित करने वाले हैं। कुल मिलाकर 229 सदस्यों को पहली बार बोलने का मौका मिला। इसका श्रेय लोकसभा अध्यक्ष के साथ ही संसदीय कार्यमंत्री को दिया जाना अपेक्षित है। प्रधानमंत्री और उनके प्रमुख सहयोगी मंत्रियों ने इस सत्र में सम्पन्न होने वाले विधायी कार्य को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लद्दाख के युवा सांसद श्री जामयांग सेरिंग नामग्याल का भाषण बहुत प्रभावी रहा और प्रधानमंत्री ने भी उन्हें बधाई /शाबासी दी।

29 जुलाई को संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित तलाक-ए-बिद्दत (एक साथ तीन तलाक बोलकर अपनी व्याहता पत्नी को छोड़ देने) की कानून द्वारा समाप्ति के कारण सारे देश की मुस्लिम महिलाओं में उत्सव का सा वातावरण है। वे गुलाल से खेल रही हैं, एक दूसरे को बधाई व मिठाई दे रही हैं। मुस्लिम पुरुषों द्वारा उन पर ढहाए जा रहे जुल्मों-सितम का अन्त जो हो गया है। मुस्लिम समाज के कुछ पुरुष वर्ग ने इस निर्णय का स्वागत किया है परन्तु मुसलमानों का एक बड़ा वर्ग इस कानून के विरुद्ध है। कुछ जिद्दी और बददिमाग मुस्लिम पुरुषों ने तो अपनी बीबी को तुरन्त तीन बार तलाक कहकर उन्हें घर से निकाल दिया। इस करतूत के द्वारा उन्होंने न केवल अपनी व्याहताओं को चुनौती दी बल्कि देश की संपूर्ण कानून और प्रशासनिक व्यवस्थाओं को ही चुनौती दे ड़ाली। अच्छा होगा प्रशासन इस कानून को कड़ाई से लागू करना सुनिश्चित करे। कुछ मुस्लिम विद्वानों का कहना है कि हमारे समाज में विवाह एक स्त्री और पुरुष के बीच समझौता (कॉन्ट्रैक्ट) है। भला अशिक्षित, उपेक्षित, पददलित व प्रताड़ित स्त्री किसी पुरुष के सामने क्या शर्त रख पाएगी, बंधुआ मजदूरों के समान उसे तो शासन प्रशासन ही उस विषम परिस्थिति से निकाल सकता है। अब मुस्लिम महिलाएं खुली हवा में सांस लेने के लिए आजाद होंगी,तथाकथित सेक्यूलर दलों की अड़ंगेबाजी के बावजूद इस कानून के लिए बधाई। आशा की जानी चाहिए कि समान नागरिक संहिता की दिशा में सरकार और आगे कदम बढ़ाएगी। यह भी कि सरकार मुस्लिम समाज में प्रचलित बहुविवाह व हलाला तथा 4-6 घंटों के लिए विवाह, 4-6 दिन के लिए विवाह-ऐसे अल्पकालिक विवाहों की घृणित प्रथा को भी समाप्त करने का प्रयास करेगी। ◆◆◆

समसामयिकी

एक सामयिक बात

... ✍ -राजेश कुमार चव्हाण'

'सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत ।।' श्रीमद्भगवत गीता में राष्ट्र की एकात्मकता पर बहुत ही सुन्दर व्याख्या की गई है। समाज में ऐक्य करना मानव जन्म का सहज कर्तव्य है। यह देखना हमारा सर्वोत्तम कर्तव्य है कि वर्तमान भेदभाव एवं विरोध जो हमारे समाज की जीवनशक्ति को क्षीण कर रहे हैं, दूर हो जाएं और हमारा सम्पूर्ण समाज एक बार पुनः संघटित एवं सामंजस्य से पूर्ण हो जाए।

हमें यह भी स्मरण रखना होगा कि अन्य सभी प्रलोभन जैसे राजनीति आदि हमारी जीवन यात्रा के साथ साथ चलते रहते हैं। ये सभी तत्व अस्थाई तथा कम गहराई वाले हैं। राजनीतिक दलों का निर्माण एवं विघटन भी एक निरन्तर क्रिया है। राजनीतिक दल निसर्गतः अस्थाई होते हैं, इनकी लोकप्रियता सदैव एक समान नहीं रहती किन्तु समाज शाश्वत् एवं अमर है। कितने ही राजा और राजवंश, कितनी ही शासन पद्धतियां एवं कितने ही राजनीतिक एवं आर्थिक रचनाक्रम गत हजारों वर्षों में आये और चले गए, किन्तु रक्त और इतिहास के बन्धनों में आबद्ध समाज के रूप में हम एक एवं पूर्ण बने रहे। अतएव हमें विचार करने की आवश्यकता है कि क्या स्थायी एवं क्या अस्थायी है। जो स्थायी है उसे ग्रहण करते आगे बढ़ना चाहिए।'◆◆◆

मानवता के संरक्षण के लिए एक व्यवस्था बनाना आवश्यक

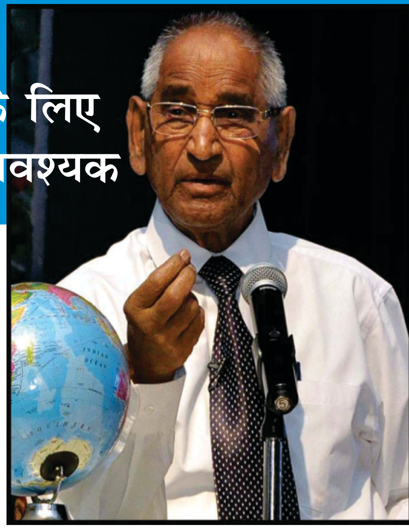

-डा0 जगदीश गांधी

अन्तर्राष्ट्रीय मानवतावादी दिवस लोगों में मानवता की भावना जगाने तथा विकसित करने के लिए ही शुरू किया गया है। दिसम्बर 2008 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने 19 अगस्त को 'विश्व मानवतावादी दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया था। संयुक्त राष्ट्र संघ के बगदाद (BJKD) में ऑफिस पर आतंकवादी हमले में 19 अगस्त, 2003 को 22 लोग मारे गए थे। अन्तर्राष्ट्रीय मानवता दिवस विश्व के उन सभी लोगों को एक श्रद्धाजंलि थी जिन्होंने अपना जीवन मानवता की राह पर चलते हुए विश्व को समर्पित कर दिया। मानव जाति के लिए अपने जीवन का बलिदान करने वाले भारत सहित विश्व के सभी मानवतावादियों को हम शत-शत नमन् करते हैं।

आज विश्व का हर देश मानवीय संवेदना की निरन्तर कमी की वजह से कराह रहा है। हम मानव होकर भी मानवता के भाव से परे हैं। जैसे-जैसे मानव भौतिक प्रगति की राह पर आगे बढ़ रहा है वैसे-वैसे वह मानवता की सामाजिक एवं आध्यात्मिक भावना से दूर होता जा रहा है। एक देश मानवता को भुलाकर दूसरे देश की जनता पर बम गिराने में लगा है। विश्व में शरणार्थियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। अफ्रीका में करोड़ों लोग भूख की वजह से दम तोड़ रहे हैं वहीं कांगो जैसे गणराज्यों में हैवानियत का दर्दनाक मंजर देखने को मिल रहा है। इसके अतिरिक्त विश्व के कई हिस्सों में मानवता का निरंतर क्षय हो रहा है।

एशिया और अफ्रीका के कई हिस्सों में इस समय करोड़ों लोग भुखमरी और गंभीर अकाल की वजह से पीड़ित हैं। इनमें से सबसे बुरी हालत महिलाओं और अबोध बच्चों की है। हालत इतने गंभीर हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ भी सभी पीड़ितों की मदद करने में खुद को असहाय पा रहा है। अफ्रीका ही नहीं विश्व के कई अन्य हिस्सों में समाज को मानवता की जरूरत है। आज जहाँ भी प्राकृतिक आपदाएँ या अन्य घटनाएं होती हैं तो सबसे पहले लोग आसपास की जनता से मानवता के नाते मदद की आस रखते हैं।

बच्चों को सुरक्षित भविष्य देना संसार के सभी राष्ट्रों का प्रथम कर्तव्य एवं दायित्व है। क्योंकि आज के बच्चे ही कल उस देश के साथ ही सारे विश्व के भाग्य निर्माता बनेंगे। आज 4 में से 1 बालक गरीबी, कुपोषण, अशिक्षा, बढ़ती हुई हिंसा, असुरक्षा और भेदभाव का शिकार हैं। 11 सितम्बर 2001 को हुए न्यूयार्क के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर आतंकवादी हमले के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद आज मानव सभ्यता का सबसे घातक शत्रु बन गया है। अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद पूरे संसार में फैली अराजकता का ही दुष्परिणाम है। यह एक ऐसी गम्भीर स्थिति है जहाँ लोग हिंसात्मक और विध्वंसकारी गतिविधियों द्वारा अपनी शिकायतों या दुखों का काल्पनिक समाधान खोजते हैं और इनके लिए वे व्यवस्था को दोषी ठहराते हैं।

आज की बिगड़ी हुई सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव लाने के लिए बच्चे ही सबसे सशक्त माध्यम हैं। अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, ग्लोबल वार्मिंग, परमाणु शस्त्रों की बढ़ती होड़, युद्ध, कानून विहीनता, कुपोषण, महामारी, भूख आदि विश्वव्यापी समस्याओं से संसार के लगभग दो अरब चालीस करोड़ बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए प्रभावशाली एवं विश्वव्यापी प्रयासों की आज अविलम्ब आवश्यकता है। जिसके लिए सभी देशों की आपसी सहमति से विश्व सरकार का गठन ही इसका एकमात्र समाधान है। प्रत्येक राष्ट्र के लिए अपने देश के बच्चों का सुरक्षित भविष्य सबसे प्रमुख मुद्दा है। इसलिए सभी राष्ट्रों के मामले में भी विश्व के दो अरब तथा चालीस करोड़ बच्चों का सुरक्षित भविष्य सबसे सर्वमान्य मुद्दा तथा चिन्ता का विषय है। प्रभावशाली अन्तर्राष्ट्रीय कानून की डोर से विश्व के राष्ट्रों को बांधकर एकताबद्ध किया जा सकता है। संसार को एकताबद्ध करके युद्धरहित बनाया जा सकता है। ऐसे होने से प्रत्येक राष्ट्र द्वारा अपनी सुरक्षा के नाम से होने वाले रक्षा बजट तथा मानव संसाधन को बचाकर प्रत्येक व्यक्ति के लिए रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा आदि की अच्छी व्यवस्था करने में लगाया जा सकता है।

विश्व में एकता एवं शांति स्थापित करने के लिए भारत को सारे विश्व की न्यायपूर्ण व्यवस्था बनाने के लिए कार्य करने के लिए आगे आना चाहिए। भारत के पास अपनी संस्कृति का वसुधैव कुटुम्बकम् का आदर्श तथा विश्व का सबसे अनूठा संविधान है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 में अन्तर्राष्ट्रीय कानून का सम्मान करने तथा विश्व एकता के लिए कार्य करने के लिए भारत के प्रत्येक नागरिक तथा राज्य को बाध्य किया गया है। आज विश्व में प्रभावशाली अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अभाव में अराजकता का माहौल व्याप्त है। भारत को विश्व के सभी देशों से परामर्श करके उन्हें विश्व संसद, विश्व सरकार तथा विश्व न्यायालय के शीघ्र गठन के लिए सहमत करना चाहिए। शान्ति प्रिय देश भारत ही अपनी उदार संस्कृति, स्वर्णिम सभ्यता तथा अनूठे संविधान के बलबूते सारे विश्व में शान्ति स्थापित कर सकता है। ◆◆◆

केन्या के सांसद टोंगी 200/- रूपये की उधारी चुकाने 30 साल बाद आये

महाराष्ट्र के औरंगाबाद में रहने वाले 70 वर्षीय काशीनाथ गवली उस वक्त आश्चर्यचकित रह गए जब उन्होंने अपने दरवाजे पर केन्या के सांसद रिचर्ड न्यागका टोंगी को खड़े देखा। दरअसल, टोंगी 30 साल पहले लिए गए 200 रूपये की उधारी चुकाने के लिए गवली के घर आए थे। केन्या के न्यारीबारी चाचे क्षेत्र से सांसद टोंगी 1985-89 के दौरान औरंगाबाद के एक स्थानीय कॉलेज में प्रबंधन की पढ़ाई कर रहे थे। केन्या जाने से पहले उन्होंने गवली से 200 रुपये उधार लिए थे। उस वक्त गवली वानखेड़े नगर में राशन की दुकान चलाते थे और टोंगी इसी इलाके में रहते थे। टोंगी को अपने घर पर देखकर गवली की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने कहा कि उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा है।

पत्नी के साथ आए टोंगी ने कहा कि यह उनके लिए एक भावनात्मक दौरा था। वह जब गवली से मिले तो उनकी आंखें भर आईं। टोंगी ने कहा कि औरंगाबाद में जब वह पढ़ाई कर रहे थे तब उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। तब गवली परिवार ने उनकी मदद की। उन्होंने सोचा था कि कभी वह भारत जरूर लौटेंगे और अपना कर्ज लौटाएंगे। वह उन्हें शुक्रिया कहना चाहते थे। उन्होंने कहा कि भगवान, बुजुर्ग गवली और उनके बच्चों का भला करे। वह बहुत अच्छे से पेश आए। वे भोजन कराने के लिए होटल ले जाना चाहते थे लेकिन हमने उनके घर पर ही भोजन करने पर जोर दिया। टोंगी ने गवली को परिवार समेत केन्या की यात्रा का आमंत्रण भी दिया। ◆◆◆

धर्मशाला में कश्मीरी पंडितों ने खुशी में फोड़े पटाखे, आंखों से छलके आंसू

बोले - 30 साल बाद खत्म हुआ वनवास, अब लौट सकेंगे अपने घर

ग्राउंड रिपोर्ट

अमरउजाला ब्यूरो

धर्मशाला। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने पर कश्मीरी पंडित बेहद खुश हैं। 30 साल का वनवास खत्म होने पर दाड़ी में मिठाइयां बांटकर और पटाखे फोड़कर पंडितों ने खुशी का इजहार किया गया। पुरानी बातों को याद कर कई पंडितों की आंखें भी भर आई लेकिन आज ये खुशी के आंसू थे। रत्न लाल भट्ट, चांद भट्ट, राजीव राजदान, डीएल भट्ट, रविंद्र बाग, सुनील कौल, सतीश भट्ट ने कहा कि उन्होंने पूरा दिन छुट्टी की। सुबह से टीवी के आगे बैठकर गृहमंत्री के प्रस्ताव का इंतजार किया। उसके बाद पूरा दिन प्रस्ताव के अपडेट देखते रहे। उन्होंने कहा कि इस ऐतिहासिक फैसले से आज जम्मू-कश्मीर देश के साथ पूरी तरह जुड़ गया है।

ठीक तीस साल पूर्व स्थानीय अखबारों में कश्मीर पंडितों को घाटी छोडने के फरमान मिले थे। किसी के

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटने पर धर्मशाला के समीप दाड़ी में जश्न मानते कश्मीरी पंडित। - अमर उजाला

आज भी आती है जन्मभूमि की याद

कश्मीरी हिंदू कल्याण समिति दाड़ी के प्रधान सतीश भट्ट ने कहा कि आज भी उन्हें अपनी जन्मभूमि की याद आती है। उन्होंने कहा कि उनके घरों पर बेशक कब्जा कर लिया गया है, लेकिन अब केंद्र सरकार के फैसले से उन्हें आस है कि उनकी अपने गांव में वापसी का सही मौका और माहौल मिल सकेगा।

वीरता पुरस्कार प्राप्त सैनिकों की लिखी जाएंगी गाथाएं : सोनी

ऊना, 2 अगस्त (कंवर): पी.डब्ल्यू.डी. रैस्ट हाऊस में हिमाचल प्रदेश इतिहास संकलन योजना के प्रांत सचिव डा. सुरेश कुमार सोनी की अध्यक्षता में ऊना इकाई की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में समिति के मुख्य उद्देश्यों पर चर्चा की गई। सर्वप्रथम बाबा आप्टे को श्रद्धांजलि दी गई और इसके उपरांत ऊना कार्यकारिणी ने प्रांत सचिव डा. उनके वीरता पुरस्कार प्राप्त सैनिकों की जीवन गाथा को लेखन के रूप में लाने के लिए प्रेरित किया। सुरेश सोनी ने बताया कि शीघ्र ही इन वीर गाथाओं पर आधारित एक पुस्तक का संकलन किया जाएगा जोकि प्रत्येक जिला में जिला पुस्तकालय और विद्यालयों में छात्रों तक पहुंचाई जाएगी।

डा. राजेश कौशल अध्यक्ष (इतिहास संकलन योजना ऊना

With Best Compliments from:

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

प्लास्टिक हटाओ

-अजय भरतिया

मानव के जन्म के साथ ही वह प्लास्टिक से बने उत्पादों का इस्तेमाल करना शुरू कर देता है। बच्चे के जन्म के बाद उसे दूध पिलाने के लिए प्लास्टिक से बनी बोतल थमा दी जाती है। फिर उसके खिलौनों से लेकर अन्य जरूरत की अधिकतर चीजें प्लास्टिक से ही बनी होती हैं। मनुष्य पूरे जीवन में सबसे ज्यादा प्लास्टिक से बने उत्पादों का ही इस्तेमाल कर उनसे घिरा रहता है। लेकिन यही प्लास्टिक मानव जीवन पर खतरा बनकर मंडरा रहा है। हम जब प्लास्टिक को कचरा बनाकर उसे जला देते हैं तो सोचते हैं उसे खत्म कर दिया, लेकिन इस तरह से कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों को न्योता दे रहे होते हैं। प्रयोग किए प्लास्टिक को खुले मे फेंककर हम पर्यावरण का नुकसान कर ही रहे हैं, इससे भूमि भी बंजर हो रही है। प्रदेश में आज भी कई स्थानों पर गुपचुप तरीके से प्लास्टिक को आग के हवाले किया जा रहा है। यह काम औद्योगिक क्षेत्रों में अधिक हो रहा है, जबकि ऐसा करना अपराध है।

मृदा प्रदूषण– प्लास्टिक की विघटक प्रक्रिया में सैकड़ों साल लग जाते हैं। इसलिए जब प्लास्टिक को भूमि के अंदर दबा दिया जाता है तो यह विघटित नहीं हो पाता है और जहरीली गैसें और पदार्थ छोड़ता रहता है। इस कारण वहां की भूमि बंजर हो जाती है। वहां अगर कोई फसल पैदा भी होती है तो उसमें जहरीले पदार्थ मिले होने से यह मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है।

प्लास्टिक से जल प्रदूषण– प्लास्टिक ऐसे पदार्थों को मिलाकर बनाया जाता है जो हजारों साल तक नष्ट नहीं होता है। यही प्लास्टिक जल प्रदूषण का भी कारण बन रहा है। पानी पीने की बोतल, खाना खाने के लिए चमच, टूथ ब्रश सहित अन्य वस्तुओं की पैकिंग के लिए भी प्लास्टिक का उपयोग किया जाता है। इन्हे प्रयोग के बाद खुले में फेंक दिया जाता है। जब बारिश होती है तो यह पानी के साथ बहकर नदी–नालों में जमा हो जाता है। इससे जल प्रदूषण होता है।

वायु प्रदूषण– मानव जीवन में प्लास्टिक का उपयोग बढ़ता जा रहा है। ऐसे में कई लोग प्लास्टिक कचरे को जला देते हैं। इससे कई जहरीली गैसें निकलती हैं, जो आबोहवा को जहरीला बनाती हैं। प्लास्टिक को जब बनाया जाता है तो इसमें बहुत सारे जहरीले केमिकल का इस्तेमाल होता है। इसे जब जलाया जाता है तो वह केमिकल हवा में फैल जाते हैं और वायु प्रदूषण का कारण बनते हैं।

जीव जंतुओं पर दुष्प्रभाव– प्लास्टिक से ज्यादातर वस्तुएं ऐसी बनाई जाती हैं जो मानव द्वारा इस्तेमाल करने के बाद फेंक दी जाती हैं। इनमें पानी की बोतलें, खिलौने, टूथ ब्रश, पैकिंग का सामान, पॉलीथीन बैग और प्लास्टिक के बॉक्स आदि। इसे खुले में फेंक दिया जाता है। बेसहारा पशु कचरे में पड़े खाने के साथ प्लास्टिक की वस्तुएं भी निगल लेते हैं। यह प्लास्टिक जीव जंतुओं के फफेड़ों में फंस जाता है।

आवश्यक निवेदनः स्वास्थ्य बचाना है तो आसपास के परिवारों का एक उपभोक्ता समूह बनाए और सामूहिक तौर पर जैविक उत्पाद आसपास के गांव से लें, अपने आसपास के गाँव को प्रेरित करे कि आपकी जरूरतों को उस गाँव से पूरा करे।वर्तमान में अभी व्यवस्था तंत्र खड़ा नहीं है इसलिए विभिन्न जगहों से पूरा करें। धीरे- धीरे आपकी आवश्यकता की समस्त वस्तुएँ एक गाँव से ही पूरी करें । एक गाँव से एक अपार्टमेंट या एक कालोनी की आवश्यकता पूरी होगी । इस प्रकार गाँव और शहर जुड़ेगा। आप जान पाओगे कि आप क्या खा रहे हो । कैसे बन रहा है। आप जिस खेत से खा रहे हो उस खेत से आपका भावनात्मक सम्बन्ध बनेगा ।

जिस गाय का दूध, घी खा रहे हैं उससे आपका माँ–बेटे का सम्बन्ध बनेगा। बाजार से बिचौलिए समाप्त हो जाएंगें। बड़े–बड़े मॉल और उदब का वर्चस्व समाप्त होगा। गाँव का पैसा गाँव में रहेगा । आज अंग्रेज़ों की भूल/षडयत्रं के कारण गाँवों की विविधता समाप्त हूई। गाँव में सब चीजें बननी फिर शुरू होगी। जब तक एक जगह से सब चीजें व्यवस्थित नही होती तब तक हम विभिन्न जगहों से पूरी करे । आप हमारी इस योजना में अवश्य जुड़े ।इस विषय पर चर्चा करनी हो अथवा कोई शंका हो अथवा सहभागी बनना चाहे तो सम्पर्क करे । ◆◆◆

भाषा से राष्ट्र प्रेम

इतिहास के प्रकांड पंडित डॉ. रघुबीर प्राय: फ्रांस जाया करते थे। वे सदा फ्रांस के राजवंश के एक परिवार के यहाँ ठहरा करते थे। उस परिवार में एक ग्यारह साल की सुंदर लड़की भी थी। वह भी डॉ. रघुबीर की खूब सेवा करती थी। अंकल-अंकल बोला करती थी। एक बार डॉ. रघुबीर को भारत से एक लिफफा प्राप्त हुआ। बच्ची को उत्सुकता हुई। देखें तो भारत की भाषा की लिपि कैसी है। उसने कहा अंकल लिफफा खोलकर पत्र दिखाएँ। डॉ. रघुबीर ने टालना चाहा। पर बच्ची जिद पर अड़ गई। डॉ रघुबीर को पत्र दिखाना पड़ा। पत्र देखते ही बच्ची का मुँह लटक गया अरे यह तो अँगरेजी में लिखा हुआ है। आपके देश की कोई भाषा नहीं है?

डॉ. रघुबीर से कुछ कहते नहीं बना। बच्ची उदास होकर चली गई। माँ को सारी बात बताई। दोपहर में हमेशा की तरह सबने साथ-साथ खाना तो खाया, पर पहले दिनों की तरह उत्साह चहक महक नहीं थी।

गृहस्वामिनी बोली डॉ. रघुबीर, आगे से आप किसी और जगह रहा करें। जिसकी कोई अपनी भाषा नहीं होती, उसे हम फेंच, बर्बर कहते हैं। ऐसे लोगों से कोई संबंध नहीं रखते।

गृहस्वामिनी ने उन्हें आगे बताया मेरी माता लोरेन प्रदेश के डथूक की कन्या थी। प्रथम बिव युद्ध के पूर्व वह फ्रेंच भाषी प्रदेश जर्मनी के अधीन था। जर्मन सम्राट ने वहाँ फ्रेंच के माध्यम से शिक्षण बंद करके जर्मन भाषा थोप दी थी। फलत: प्रदेश का सारा कामकाज एकमात्र जर्मन भाषा में होता था, फ्रेंच के लिए वहाँ कोई स्थान न था।

स्वभावत: विद्यालय में भी शिक्षा का माध्यम जर्मन भाषा ही थी। मेरी माँ उस समय ग्यारह वर्ष की थी और सर्वश्रेष्ठ कान्वेंट विद्यालय में पढ़ती थी। एक बार जर्मन साम्राज्ञी कैथराइन लोरेन दौरा करती हुई उस विद्यालय का निरीक्षण करने आ पहुँची। मेरी माता अपूर्व सुंदरी होने के साथ-साथ अत्यंत कुशाग्र बुद्धि भी थी। सब बच्चियाँ नए कपड़ों में सजधज कर आई थी। उन्हें पंक्तिवद्ध खड़ा किया गया था। बच्चियों के व्यायाम, खेल आदि प्रदर्शन के बाद साम्राज्ञी ने पूछा कि क्या कोई बच्ची जर्मन राष्ट्रगान सुना सकती है?

मेरी माँ को छोड़ वह किसी को याद न था। मेरी माँ ने उसे ऐसे शुद्ध जर्मन उच्चारण के साथ इतने सुंदर ढंग से सुना पाते। साम्राज्ञी ने बच्ची से कुछ इनाम माँगने को कहा। बच्ची चुप रही। बार बार आग्रह करने पर वह बोली 'महारानी जी, क्या जो कुछ मैं माँगू वह आप देंगी?' साम्राज्ञी ने उत्तेजित होकर कहा 'बच्ची! मैं साम्राज्ञी हूँ। मेरा वचन कभी झूठा नहीं होता। तुम जो चाहो माँगो। इस पर मेरी माता ने कहा 'महारानी जी, यदि आप सचमुच वचन पर दृढ़ हैं तो मेरी केवल एक ही प्रार्थना है कि अब आगे से इस प्रदेश में सारा काम एकमात्र फ्रेंच में हो, जर्मन में नहीं।' इस सर्वथा अप्रत्याशित माँग को सुनकर साम्राज्ञी पहले तो आश्चर्यकित रह गई, किंतु फिर क्रोध से लाल हो उठी। वे बोली 'लड़की' नेपोलियन की सेनाओं ने भी जर्मनी पर कभी ऐसा कठोर प्रहार नहीं किया था, जैसा आज तूने शक्तिशाली जर्मनी साम्राज्य पर किया है। साम्राज्ञी होने के कारण मेरा वचन झूठा नहीं हो सकता, पर तुम जैसी छोटी सी लड़की ने इतनी बड़ी महारानी को आज पराजय दी है, वह मैं कभी नहीं भूल सकती।

जर्मनी ने जो अपने बाहुबल से जीता था, उसे तूने अपनी वाणी मात्र से लौटा लिया।

मैं भलीभाँति जानती हूँ कि अब आगे लोरेन प्रदेश अधिक दिनों तक जर्मनों के अधीन न रह सकेगा। यह कहकर महारानी अती उदास होकर वहाँ से चली गई। गृहस्वामिनी ने कहा 'डॉ. रघुबीर, इस घटना से आप समझ सकते हैं कि मैं किस माँ की बेटी हूँ। हम फ्रेंच लोग संसार में सबसे अधिक गौरव अपनी भाषा को देते हैं। क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र प्रेम और भाषा प्रेम में कोई अंतर नहीं..।' हमें अपनी भाषा मिल गई। तो आगे चलकर हमें जर्मनों से स्वतंत्रता भी प्राप्त हो गई। आप समझ रहे हैं ना ! निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय की शूल

◆◆◆

सपनों का एक गांव-रविंद्रनगर

-प्रदीप कुमार पाण्डेय

यह कहानी है प्रकृति की प्रतिकूलताओं के विरूद्ध मानव के यशस्वी संघर्ष की। सन् 1947 में विभाजन की विभीषिका में अपना सब कुछ खो कर शरणार्थी के रूप में आए पीड़ित बंगाली परिवारों के पुरूषार्थ की, जिन्होंने अपने परिश्रम से बालू के टीलों को लहलहाते खेतों में तब्दील कर दिया। गुरूदेव रविंद्रनाथ ठाकुर के जयंती के दिन बसे इस सुविधा-संपन्न गांव, रविंद्र नगर को देखकर एक 'आईडियल विलेज' की कल्पना साकार होती नजर आती है । उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जिले के मोहम्मदी तहसील के इस गांव में जल निकासी के लिए न कोई नाली है न कहीं कीचड़ । गांव में वर्षो से जल संरक्षण के लिए 'वाटर हार्वेस्टिंग तकनीक' का उपयोग किया जा रहा है। घरों के पास बने सोखते गड्ढे हों, घर-घर शौचालय हों या पूरे गांव में लगे आम, अमरूद, अनार, कटहल, नीम, जामुन आंवला, तुलसी जैसे फलदार व औषधीय पेड़ हों, ये सभी गांवों वालों की सामूहिक प्रयास की जीवंत कहानी कहते हैं। घरों की दीवारों पर चित्रकारी एवं हरा-भरा विद्यालय देखकर 100 साक्षरता वाले इस गांव में यह एक सपने के साकार होने जैसा लगता है।

50 वर्षो से चल रही इन परिश्रमी बंगाली परिवारों को विकास की नई राह दिखाई आज रविंद्र नगर देश के सबसे विकसित गांवों में से एक है। कभी मियांपुर कहलाने वाले इस गांव को जादू-टोना करने वाले सपेरों का गांव समझकर लोग जाने से डरते थे। वहां भैरवचंद्र राय व प्रेमशंकर अवस्थी जैसे नवयुवकों ने लोगों का विश्वास जीत कर गांव के विकास के दरवाजे खोले। भला विभाजन की पीड़ा को रविंद्र नगर के लोगों से बेहतर कौन समझ सकता है! वर्षो शरणार्थी कैंपों में भुखमरी, डायरिया काला ज्वर, हैजा जैसी बीमारियों में अपनों को खोने के बाद पुनर्वासन के नाम पर उन्हें ट्रकों में भर कर आधी रात को गोमती के किनारे इस अरण्यक वन में छोड़ दिया गया था। जिले के ही ग्राम विकास प्रमुख तपन कुमार विश्वास बताते हैं कि 1964 में यहां आकर बसे इन परिवारों ने 8 वर्षो तक भीषण कष्ट झेले। बंजर जमीन पर कुछ भी उगाना मुश्किल था। लोगों ने खाने के लिए श्यामा घास का बीज बाल(चावल की तरह) मछली के साथ खाकर दिन बिताए। पहले गांव वालों ने कड़ा परिश्रम कर जमीन को खेती के लायक बनाया। पहला विद्यालय गांव वालों के द्वारा दी गई जमीन पर शुरू की जिसे बाद में सरकार से प्राथमिक विद्यालय की मान्यता मिली। आज भी संजय विश्वास, मलिका मण्डल, मिलन, शंभू जैसे कई युवा गांव के सरकारी स्कूलों में बच्चों को नि:शुल्क पढाते हैं। शायद इसीलिए रविंद्र नगर 100 साक्षर है। यहां आज भी प्राचीन परंपरा के अनुसार प्रतिदिन घरों में गोबर से लिपाई की जाती है और शंख-ध्वनि से सुबह की शुरूआत होती है। विचित्र लगता है किंतु सत्य है, यहां रोजगार के लिए अधिकांश घरों में महिलाएं तेंदू पत्तों से बीड़ी बनाती हैं फिर भी गांव में कोई बीड़ी नहीं पीता। गांव में महिलाओं के चार स्वयं सहायता समूह, बचत के साथ-साथ सिलाई, कढाई और रोजगार के अन्य माध्यमों का प्रशीक्षण भी दे रहे हैं। सरकारी स्कूल, पंचायत-घर, गली, मंदिर हो या फिर खेल के मैदान गांव वालों ने इन सबको इतना स्वच्छ और सुंदर बनाया है कि पूरे उत्तर प्रदेश में इतना सुंदर सरकारी विद्यालय मिलना मुश्किल है। खेल का मैदान स्टेडियम में बदल चुका है। कच्ची सड़कों को भी श्रमदान कर पक्का कर दिया गया है। गांव में 2009 में ग्राम विकास के कार्य की शुरूआत करने वाले प्रेमशंकर अवस्थी कहते हैं कि इस गांव में कोई बेरोजगार नहीं है। औद्योगिक क्षेत्र में लगने वाली ऊंची चिमनियों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध रविंद्र नगर में मूर्ति बनाने, गृह निर्माण से लेकर 'मोटर बाईडिंग' एवं 'इलैक्ट्रिशियन' तक के अनेक प्रकार के कार्य होते हैं। वे बताते हैं कि मुख्यमंत्री योगी के चिकित्सकीय सलाहकार डॉ चित्तरंजन विश्वास समेत गांव के कई युवा पढ़-लिखकर बहुत आगे बढ गए हैं। ◆◆◆

हिमाचल प्रदेश शिक्षक महासंघ के पदाधिकारी विभिन्न जिलों से उपायुक्त के माध्यम से प्राथमिक संवर्ग का मांग पत्र सौंपते हुए

कपिल देव प्रेमी and 19 others 1 Comment

Rishi Bagree @rishibagree · 11m
उसने आज खुद फ़ोन बंद कर दिया जो कल तक चीखता था कि कश्मीर में फ़ोन क्यों बंद है

P. Chidambaram @PChida... · 1d
जम्मू कश्मीर में सब कुछ "सामान्य" है। स्कूल खुले हैं, कोई विद्यार्थी नहीं है।

जम्मू कश्मीर में सब कुछ "सामान्य" है। इंटरने
एक बार फिर बंद कर दिया गया है।
Show this thread

OpIndia.com @OpIndia_com · 2m
आख़िर #NDTV का असली मालिक कौन सा व्यक्ति या संस्था है? शेयर्स की हेराफेरी के पीछे मकसद क्या था? इन सबमें ICICI बैंक का क्या हित था?

2004 से अब तक की कहानी: जानिए क्यों 'मीडिया की स्वतन्त्रता' का रोना रो रहे हैं रॉय दम्पति?

@UnSubtleDesi की रिपोर्ट

प्रेस फ्रीडम का रोना रो रहे NDTV और रॉय दम्पति का काला चिट्ठा: शेयर्स की धोखाधड़ी से...
hindi.opindia.com

Swami Dipankar Retweeted

Swami Dipankar @swamidipa... · 2h
भगवा को आतंक से जोड़ने वाले आज ख़ुद भ्रष्टाचार के आतंक का अभिप्राय बने हुए है CBI दरवाज़े पर नोटिस चस्पा कर रही है।

सुने हो या नहीं "भगवान के यहाँ देर है अंधेर नहीं"

Dainik Bhaskar @DainikBhas... · 9m
हॉकी /भारतीय टीम ओलिंपिक टेस्ट टूर्नामेंट जीती, फाइनल में न्यूजीलैंड को 5-0 से हराया
bhaskar.com/sports/anya-kh... #Hockey #India

रिपब्लिक.भारत @Republic_Bh... · 9m
PM मोदी ने जाम्बिया के राष्ट्रपति से वार्ता की : रक्षा, खनन, कारोबारी सहयोग पर जोर

Dainik Bhaskar @DainikBhas... · 6m
अयोध्या /रामलला के पक्षकार ने कहा- लोगों की आस्था ही विवादित स्थल को जन्मभूमि साबित करने के लिए काफी
bhaskar.com/national/news/...
#AyodhyaCase

दूरदर्शन न्यूज़ @DDNewsHindi · 1m
सीबीआई ने एनडीटीवी के प्रमोटर प्रणय रॉय और उनकी पत्नी राधिका रॉय के खिलाफ मामला दर्ज किया, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के कथित उल्लंघन का मामला

Swati Singh @bjpswatisingh · 9m
मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री व भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री बाबूलाल गौर जी के निधन का दुखद समाचार प्राप्त हुआ।ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें व शोकाकुल परिजनों को इससे उबरने की शक्ति दें।
ॐ शांति।

News18 India @News18India

भारत को परमाणु हमले की धमकी देने वाले पाकिस्तान के रेल मंत्री शेख रशीद की लंदन में जमकर पिटाई की गई है.

Translate Tweet

पाकिस्तान के रेल मंत्री की लंदन में पिटाई, भारत को दी थी परमाणु हमले की धमकी | world - News in...
hindi.news18.com

7:58 AM · 23 Aug 19 · TweetDeck

प्रश्नोत्तरी

1. भारत में 1931 ई. में बनी पहली सवाक फिल्म कौन सी थी?
2. भारत का प्रथम न्यूटॉन रिएक्टर 'कामिनी' कहाँ स्थित है?
3. समाचारों में बहुचर्चित 'वाडा' WADAकोड किससे सम्बन्धित है?
4. भारत ने किस वर्ष और कहाँ हुये ओलम्पिक खेल में हॉकी का पहला स्वर्ण पदक जीता था?
5. 'भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन' का मुख्यालय कहाँ है?
6. भारतीय वायुसेना कितनी कमानों में संगठित की गयी है?
7. भारत की किस महिला ने सर्वप्रथम 'मिस वर्ल्ड' का खिताब जीता?
8. भारत एवं पाकिस्तान के बीच की सीमा को किस नाम से जाना जाता है?
9. क्रिकेट पिच की लम्बाई कितनी होती है?
10. हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव बी.के. अग्रवाल को कहां नियुक्त किया गया है?

पहेली

1. ऐसी क्या चीज है जिसे जितना खीचेंगे वह उतनी छोटी होती जाएंगी?
2. सोने की उस चीज का नाम बताओं जो सुनार की दुकान पर नहीं मिलती है?
3. वह क्या है जो बाहर फ्री में और हॉस्पिटल में पैसे में मिलती है?
4. आदमी की कौन सी चीज हमेशा बढ़ती रहती है?
5. वह क्या चीज है जो एक जगह से दूसरी जगह जाती है लेकिन अपनी जगह से नहीं हिलती है?
6. कौन सी चीज हमें जीवन में दो बार फ्री में मिलती है लेकिन तीसरी बार नहीं?

उत्तर- 1. सिगरेट, 2. पसीना, 3. ऑक्सीजन, 4. उसकी उम्र, 5. सड़क या रास्ता, 6. दांत

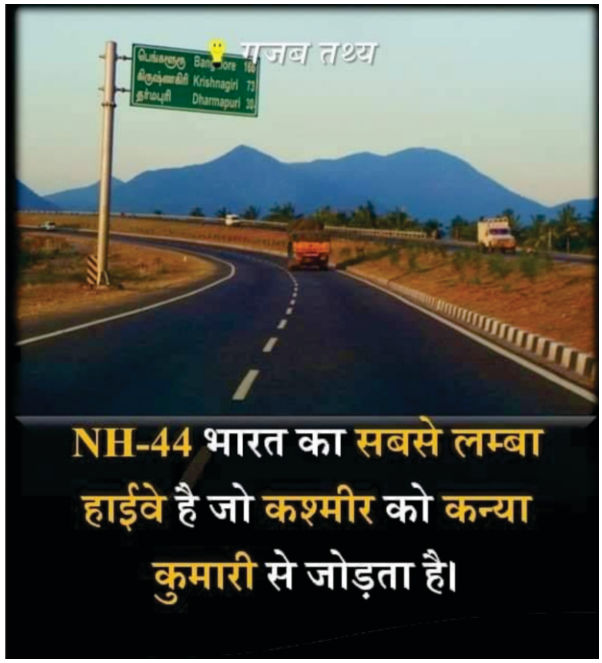

रक्षाबंधन के अवसर पर राज्यपाल कलराज मिश्र के साथ सामूहिक छायाचित्र में पोर्टमोर विद्यालय की शिक्षिकाएं एवं छात्राएं

एमएसएमई विकास संस्थान द्वारा आयोजित औद्योगिक अभिप्रेरणा शिविर में उपस्थित सराहाँ के प्रतिभागी

राज्यस्तरीय वन महोत्सव 2019 में सर्वोत्तम वन्यजीव मित्र पुरस्कार प्राप्त करते हुए वन विभाग के वन रक्षक संतोष कुमार ठाकुर

पालमपुर में आरोग्य भारती की प्रांतीय बैठक में उपस्थित सदस्यगण

मातृशक्ति दुर्गावाहिनी द्वारा तीज़ महोत्सव का आयोजन

कर्नाटक में बाढ़ में बह गए पुल की मरम्मत करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान,
पालमपुर, हिमाचल प्रदेश –176061

परिकल्पना

हिमालयी जैवसंपदा के सतत उपयोग द्वारा जैवआर्थिकी को बढ़ावा देने हेतु प्रौद्योगिकियों

उद्देश्य

सर्वोत्कृष्ट विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी द्वारा हिमालयी जैवसंपदा से प्रक्रमों और उत्पादों की

सीएसआईआर–अरोमा मिशन– जंगली गेंदा, दमसक गुलाब, मुश्कबाला, लेमनग्रास की खेती तथा गैरउत्पादक/अनुपयोगी भूमि में अन्य संभावित फसलों की खेती के लिए किसानों को सहयोग

सीएसआईआर– फाइटोफार्मास्यूटिकल मिशन– दुर्लभ एवं लुप्तप्राय औषधीय पौधों की प्रजातियों का संरक्षण और पुनर्वास तथा किसानों की आय बढ़ाने के लिए इन प्रजातियों की खेती को बढ़ावा देना

सीएसआईआर– न्यूट्रासयूटिकल मिशन– स्वास्थ्य हेतु स्वदेशी स्रोतों पर आधारित न्यूट्रस्यूटिकल्स का विकास एवं समग्र पोषण संकेन्द्रण

पादप किस में, पुष्पखेती और कृषि प्रौद्योगिकी– गुलाब, कैला लिलि, जरबेरा, लिलियम, बर्ड ऑफ पेराडाइज, एल्स्ट्रोमेरिया, सटीविया, दमसक गुलाब, जंगली गेंदा, चाय, कपूरकचरी, मुश्कबाला और जंगली हल्दी

प्रौद्योगिकियां– प्राकृतिक शून्य केलोरी स्वीटनर, केटेकिन, टी वाइन, हर्बल चाय, क्रिस्पी फ्रूट, प्रिज़रवेटिव रहित रेडी टु ईट खाद्य प्रौद्योगिकियां, कुपोषण निवारण हेतु आयरन व केल्शियम युक्त मेंगोबार व न्यूत्रीबार, थर्मोस्टेबल एन्जाइम दृ सॉड, आरएनए आइसोलेशन सोल्युशन तथा एसिन

कौशल विकास– प्रयोगशाला पशु विज्ञान में डिप्लोमा, प्रयोगशाला परीक्षण और विश्लेषणात्मक व्यावहारिक ज्ञान में डिप्लोमा, बागवानी और पुष्पोत्पादन, संरक्षित खेती में कौशल विकास तथा महिला एंव युवा सशक्तिकरण

इन्क्यूबेशन सुविधाएं– खाद्य प्रौद्योगिकी, हर्बल प्रसंस्करण, मूल्यवर्धित चाय उत्पाद और पादप उतक संवर्धन

सेवाएं– विश्लेषणात्मक सेवाएं (गुणात्मक एवं मात्रात्मक विश्लेषण, सामग्री/उत्पादों का रसायनिक रूपरेखा (प्रोफाइलिंग) और मानकीकरण), पैकबायो लाइब्रेरी बनाना एवं सिक्वेंसिंग; मृदा, पादप और नैनो सामग्री विश्लेषण; विनियामक सेवाएं (विषाक्तता अध्ययन, जेबराफिश, चूहों व मूश्कों में मुखीय एवं त्वचीय विषाक्तता), हेमटोलॉजिकल एवं हिस्टोपैथोलॉजिकल विश्लेषण, विभिन्न मानवीय कैंसर कोशिकाओं पर साइटो–टॉक्सीसिटी अध्ययन

अन्य – सुदूर संवेदी (रिमोट सेन्सिंग) तथा भौगोलिक सूचना प्रणाली

निदेशक

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान

पालमपुर (हिमाचल प्रदेश)– 176061

टेलीफोन– 01894– 230411, फैक्स 01894– 230433,

ईमेलः director@ihbt.res.in वेबसाइट– http://@www.ihbt.res.in

Designed by **NEW ERA**, Shimla Ph.: 0177-2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रेस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

follow us on:

Posting Date: 1st & 5th of the Month